अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष-39, अंक-19, 16-31 मई, 2016

किसी को भी अन्न और वस्त्र का अभाव न हो

मेरी राय में भारत की—न सिर्फ भारत की बल्कि सारी दुनिया की अर्थ-रचना ऐसी होनी चाहिए, जिससे किसी को भी अन्न और वस्त्र के अभाव की तकलीफ न सहनी पड़े। दूसरे शब्दों में, हरएक को इतना काम अवश्य मिल जाना चाहिए कि वह अपने खाने-पहनने की जरूरतें पूरी कर सके और यह आदर्श निरपवाद रूप से तभी कार्यान्वित किया जा सकता है, जब जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं के उत्पादन के साधन जनता के नियंत्रण में रहें। वे हरएक को बिना किसी बाधा के उसी तरह प्राप्त होने चाहिए, जिस तरह भगवान की दी हुई हवा और पानी हमें प्राप्त हैं; किसी भी हालत में उन्हें दूसरों के शोषण के लिए चलाये जानेवाले व्यापार का साधन नहीं बनना चाहिए। किसी भी देश, राष्ट्र या समुदाय का उन पर एकाधिकार अन्यायपूर्ण होगा। हम आज न केवल अपने दुखी देश में बल्कि दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी जो गरीबी देखते हैं, उसका कारण इस सरल सिद्धान्त की उपेक्षा ही है। ("सिलेक्शन्ज फ्रॉम गांधी" से)

—महात्मा गांधी

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्ष : 39, अंक : 19, 16-31 मई, 2016

संपादक
बिमल कुमार
मो. : 9235772595

कार्यकारी संपादक
डॉ.योगेन्द्र यादव

संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ, साधना केन्द्र
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

मूल्य	:	पांच रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC No. UBIN-0538353
Union Bank of India

विज्ञापन दर
पूरा पृष्ठ : 2000 रुपये
आधा पृष्ठ : 1000 रुपये
चौथाई पृष्ठ : 500 रुपये

इस अंक में...

1. संपादकीय... 2
2. गांधीजी और नयी पीढ़ी-3 3
3. शिक्षक की भूमिका 4
4. गुरु की शिष्य-पूजा 6
5. गाँवों पर शहर की विलासिता... 7
6. बढ़ते तापमान से सुलगती आर्थिक... 8
7. पर्यावरणीय संकट 9
8. जल संरक्षण : बाध्यकारी नियम 10
9. पर्यावरण – एक रिपोर्ट 11
10. एक्टिविस्ट अमन से बातचीत 14
11. अलसी के औषधीय गुण 19
12. शोषित और उपेक्षित जागो! 20

सम्पादकीय

लौटें रचनात्मकता की ओर...

अभी उत्तर प्रदेश का चुनाव दूर है, पर नेता, विधायक, मंत्री अभी से सावधान हो रहे हैं। अफसर, नेता और ठेकेदारों की मिलीभगत चल रही है। ठेकेदार, अफसर और नेता दोनों को साधे हुए हैं। माल देकर ठेका लेता है और माल देकर ही अपना काम पास करवा लेता है। उसकी गुणवत्ता से उसे कोई मतलब नहीं है। जनता की सेवा के नाम पर मौज करनेवाले ये लोग जनता की कमजोरियों का फायदा उठाते हैं। जिसके कारण जनता तबाह हो जाती है। सवाल यह उठता है कि जनता की कमजोरी है क्या? कमजोरियाँ तो बहुत हैं, लेकिन सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि वह अपनी ताकत को पहचान नहीं पाती है। अज्ञानवश सरकार को ही अपना सब कुछ मान बैठती है, मात्र अपने कुछ क्षुद्र स्वार्थ को पूरा करने के लिए। जब तक जनता में एकता नहीं होगी, वह अपने स्वार्थों से ऊपर नहीं उठेगी, तब तक इसी प्रकार ये सरकारें इनका शोषण करती रहेंगी।

हद तो तब हो जाती है, जब इन राजनीतिक दलों के नेतागण अपनी पार्टी के आदर्शों, राष्ट्र के हितों और जनसेवा के कामों को ताख पर रख देते हैं। अब तो हालत इस हद तक पहुँच गयी है कि जनता के ये प्रतिनिधि चुनाव जीतने के लिए इस पार्टी से उस पार्टी में छलाँग लगाते रहते हैं। इतने तक सीमित होता, तो भी गनीमत थी। अब तो इनकी बोली लगने लगी है, जो अधिक पैसा देता है, उसके साथ ये हो लेते हैं। न तो ऐसे नेता पार्टी के प्रति वफादार होते हैं और न ही ये अपने मतदाताओं के प्रति वफादार होते हैं।

इस समय उत्तर प्रदेश का मतदाता युवा है। वह अपना भला-बुरा समझता है, इस कारण उसे इस प्रकार के नेताओं को समझना होगा और कुछ साफ छवि के निष्ठावान नेताओं को चुनना होगा। तभी प्रदेश में एक स्वच्छ छवि की सरकार बन सकती है।

अभी पाँच राज्यों में विधानसभा के चुनाव हुए। मतदाताओं को डराने से लेकर लुभाने तक जो प्रयास हुए, वे किसी से छिपे नहीं हैं। इन राज्यों में चुनाव जीतने के लिए वे सभी हथकंडे अपनाये गये, जो जनता को गुमराह कर सकते हैं। इन सभी प्रदेशों में जनता को कितने खाँचों में बाँट दिया गया। जनता ने भी कुछ समझने की कोशिश नहीं की। भावनाओं में बहकर उन्होंने भी अपने विधायक चुन लिये। जिनकी जनसेवा या उपलब्धता की कोई नियमावली होगी, यह तय नहीं है। लोकतंत्र है, चुनाव भी होना है। ऐसे में गलतियाँ दोनों तरफ से हैं, एक तो अच्छे लोग मैदान में आना नहीं चाहते, दूसरे राजनीति को व्यवसाय माननेवाले हटना नहीं चाहते। पहल दोनों तरफ से जरूरी है। एक प्रयास दिल्ली में हुआ, जिसका परिणाम भी देखने को मिला। जनता ने बाहुबल, धनबल को दरकिनार करते हुए, ऐसे लोगों को चुना, जो उनके ही बीच के ही लोग थे। लेकिन वह भी कोई ऐसा आदर्श नहीं दे पाये, जो दूसरे राज्यों में हुए चुनावों के लिए नजीर बन पाता। यदि हम वास्तव में बदलाव चाहते हैं, तो एक बार फिर हमें गांधी के एकादश व्रत एवं रचनात्मक कार्यों की ओर लौटना पड़ेगा। तभी इस देश की जनता और राजनीति दोनों का कल्याण होगा।

–डॉ. योगेन्द्र यादव

गांधीजी और नयी पीढ़ी-3

❑ गुणवंत शाह

''आज के इनसान में जो बेचैनी फैली हुई है, उसके पीछे दुनिया की आज की हालत है। अगर इसमें कोई परिवर्तन करना है, तो मनुष्य जाति के सामने एक सही रास्ता है। यह रास्ता है—सविनय अवज्ञा—इस शर्त के साथ कि बुनियादी मानव अधिकारों का ध्यान रखा जाय। करोड़ों लोगों को भूख और मौत की तरफ ढकेलने के लिए आज की राजनैतिक और आर्थिक नीतियाँ कसूरवार हैं। सबसे ज्यादा कसूर दुनिया के धनी और शक्तिशाली लोगों का है। अगर दुनिया के असहाय लोग अपने भाग्य के विधाता बन जायँ और ज्यादा-से-ज्यादा लोग जीने के बुनियादी अधिकार के सिवा किसी कायदे-कानून को नहीं मानें, और गांधीजी के अहिंसात्मक संघर्ष के हथियार का उपयोग करें, तो यह निश्चित है कि हम अपनी आँखों के सामने ही इस आफत से छुटकारा पा जायेंगे।''

इससे जाना जा सकता है कि जागतिक हालातों में गांधीजी का सत्याग्रह कितना प्रासंगिक है।

गांधीजी वैष्णव थे और उनमें वैष्णव जैसी चतुराई थी। लेकिन इस चतुराई का उपयोग उन्होंने किसी को नीचा दिखाने के लिए या अपने को ऊँचा बताने के लिए नहीं किया। इसलिए उनके दुश्मन भी उनकी चतुराई से आकर्षित होते थे। उनके विनोद में भी गंभीरता का पुट रहता था और उनकी गंभीरता में विनोद की छटा होती थी। काका साहेब कालेलकर ने एक घटना का जिक्र किया है :

''एक दिन मैं छापाखाने में गया था। वहाँ स्वामी रोज की तरह काम में मशगुल थे। उनके पास दूध का एक गिलास और रसीले केले रखे हुए थे। छापाखाने से एक-के-बाद एक प्रूफ उनके हाथों में आ रहे थे। वह बायें हाथ से केले का एक टुकड़ा काटकर मुँह में रख लेते थे। और दायें हाथ से प्रूफ की गलतियाँ सुधारते जाते थे। एक प्रूफ को निबटाने के बाद दूध का एक घूँट गटक जाते थे। फिर दूसरा प्रूफ देखने लगते थे। यह सिलसिला तीन-चार दिन तक लगातार चलता रहता था। न तो नहाने-धोने का समय मिलता था, न किसी और काम के लिए। जहाँ बैठकर काम करते थे, वहीं सो जाते थे।''

''इसी तरह काम करते-करते एक दिन उन्हें उत्तर भारत के किसी शहर से भेजा हुआ गांधी का पोस्टकार्ड मिला। उसमें लिखा था, 'तुम 'नवजीवन' का काम ऐसी खूबी से संभाल रहे हो कि मुझे कोई चिन्ता नहीं। मैं समझता हूँ कि तुम्हारा काम ठीक ढंग से चल रहा होगा।' इस पोस्टकार्ड को पढ़कर स्वामी चक्कर में पड़ गये। बापू ने यह चिट्ठी क्यों भेजी है? 'न तो मैंने अपनी दिक्कत की कोई शिकायत की है और न ही किसी और ने मेरी शिकायत की होगी।' वह इसी उधेड़-बुन में थे कि अकस्मात उन्हें कुछ याद आ गया। 'अच्छा, यह बात है! मैंने नवजीवन प्रेस में छह महीने काम करने का वायदा किया था और आज छह महीने पूरे हो रहे हैं। बुड्ढा बनिया कैसा चालाक है? इस तरह वह मेरे वायदे को आगे बढ़ाना चाहता है। मैं तो भूल ही गया था कि शुरू में मैं यहाँ सिर्फ छह महीने के लिए आया था। अब देखो, वह मुझे आगे के लिए बाँधना चाहते हैं। जीवतराम सच कहते हैं कि एक दिन की यात्रा में तुम्हें इस बूढ़े से ज्यादा घाघ कोई चिड़िया नहीं मिलेगी।''

अफसोस की बात यह है कि गांधीजी का असली रूप आज की पीढ़ी के सामने नहीं आया है। उसे तो गांधीजी का विकृत रूप देखने को मिला है। गांधी के कुछ विचार नयी पीढ़ी के पास पहुँचे हैं, लेकिन ये भी उन अनुयाइयों की मार्फत पहुँचे हैं, जो राजनीति में बहुत ज्यादा उलझे हुए हैं। कभी-कभी नयी पीढ़ी को गांधीजी का अनुभव उन लोगों की मार्फत भी हुआ है, जिन्होंने आजादी मिलने तक पूरी ईमानदारी से गांधीजी का साथ दिया, लेकिन बाद में उतनी ही बेईमानी से खानगी तौर पर उनसे नाता तोड़ दिया। अगर वे सार्वजनिक रूप में ऐसा करते तो कोई एतराज नहीं होता, क्योंकि गलती का अहसास होने पर प्रायश्चित किया जा सकता था। मगर ऐसा हुआ नहीं। वे लोग गांधीजी के नाम का सिक्का भुनाते रहे और उनकी मूर्तियों पर मालाएँ चढ़ाते रहे। इससे गांधीजी को सब तरफ से नुकसान पहुँचा। उनके आलोचकों ने तो उन्हें पुरानवादी कहकर गालियाँ दीं और प्रशंसकों ने उन्हें 'बापू' कहते-कहते त्याग दिया। इसके अलावा गांधीजी के सच्चे अनुयाइयों ने अपने कट्टरपन से और पुरानी गांधी विचारधारा में तनिक भी हेर-फेर का विरोध करके गांधीजी के प्रति अन्याय किया।

इस व्याख्यान को समाप्त करने से पहले मैं नयी पीढ़ी के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। बचपन में हमसे बार-बार कहा जाता था—'बड़ों का आदर करो' अब जब हम अधेड़ हो गये हैं, तब कहा जाता है—'युवजन का आदर करो।' मैं उस पीढ़ी का नमूना हूँ जो न इधर है न उधर। नौजवान पीढ़ी मुझे बुड्ढा समझती है और पुरानी पीढ़ी मुझे जवान समझती है। एक तरह से यह स्थिति लाभदायक भी है क्योंकि शायद मैं दोनों पीढ़ियों के बीच पुल बन सकता हूँ।

एक समय था जब कोप भरी पीढ़ी का नारा था या तो मुझे स्वतंत्रता दो या मृत्यु। लेकिन आज की पीढ़ी आमूल-चूल परिवर्तन

चाहनेवाले 'सुखवाद' के प्रभाव से नशीली दवाओं और चीजों की तरफ घसीटी जा रही है। आल्डूस हक्सले के शब्दों में इन सुखवादी युवजनों का नारा है, ''मुझे तो हैम्बर्गर और टी0वी0 सैट चाहिए, स्वतंत्रता की जिम्मेदारी भाड़ में जाय।''

हो सकता है कि नयी पीढ़ी की निगाह में गांधीजी की कुछ मर्यादाएँ हों जो उसे उनसे दूर रख रही हैं। लेकिन हमको पूरी गंभीरता से यह भी सोचना चाहिए कि नयी पीढ़ी की कौन-सी मर्यादाएँ हैं जो उसे गांधीजी से दूर रख रही हैं।

अगर इस विषय पर पूरी ईमानदारी से सोचा जाय, तो यकीन है कि नयी पीढ़ी गांधीजी की तरफ उसी तरह खिंची चली जायेगी, जिस तरह नदियाँ समुद्र की तरफ खिंचती हैं। लॉर्ड माउन्टबैटन ने गांधीजी को 'एक आदमीवाली फौज' बताया था। मेरा आप लोगों से अनुरोध है कि आप एल्विन टॉफलर की युगान्तरकारी पुस्तक 'द थर्ड वेव' (तीसरी लहर) जरूर पढ़ें। इसके एक अध्याय का शीर्षक है—'गांधी विद सैटेलाइट्स' (चेलों से घिरा गांधी)।

कुछ लोग सच्चे दिल से ख्याल करते हैं कि गांधीजी ने कुछ बड़ी गलतियाँ की थीं। कुछ लोगों का ख्याल है कि खिलाफत आन्दोलन का समर्थन करके गांधीजी ने वास्तव में भूल की थी। सुभाष बाबू के प्रति रवैया और सरदार पटेल की जगह जवाहरलाल नेहरू को प्रधानमंत्री बनाना भी उनकी भूलें थीं। इन तथाकथित भूलों के बारे में चर्चा तो यहाँ अप्रासंगिक है, लेकिन मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि गांधीजी की भूल भी बिल्कुल निष्कपट थी। यह भी याद रखना चाहिए कि महान पुरुष कभी छोटी-छोटी गलतियाँ नहीं करते और उनकी छोटी-छोटी गलतियों के भी बहुत दूरगामी परिणाम होते हैं। इस लिहाज से गांधीजी ऐसे 'महात्मा' नहीं थे जो कभी कोई गलती करें ही नहीं। उन्हें तो ऐसा महापुरुष समझना चाहिए जो अपने क्रियाकलापों के प्रति पूरी तरह जागरूक रहते हुए भी अपनी गलती कबूल करने को सदा तत्पर रहते थे और फिर उसे सुधारने का भी भरसक जतन करते थे। ऐसी अपेक्षा करना गांधीजी के प्रति अन्याय होगा कि वह कभी कोई भूल कर ही नहीं सकते थे।

हकीकत तो यह है कि वह अपनी अन्तरात्मा को अपने सामने मेज पर रख देते थे और फिर मानो सूक्ष्म-दर्शन काँच हाथ में लेकर अपने भीतर की सारी कमजोरियों को खोज निकालने की कोशिश करते थे। ऐसे निस्संग स्वभाव से ही उन्होंने दुनिया को अपनी आत्मकथा जैसा अमूल्य उपहार दिया।

आज संसार का जो नया रूप बन रहा है, उसमें आगे की शताब्दियों में गांधीजी के जीवन-दर्शन की प्रासंगिकता लगातार बढ़ती जायेगी। ❑

विचार-सौरभ

शिक्षक की भूमिका

❑ आचार्य दादा धर्माधिकारी

आज शिक्षक का ज्ञान किताब के बाहर नहीं गया है। पुराने जमाने का पण्डित उतनी ही बात जानता था, जितनी किताब में थी। किताब में प्रमाण मिलता था, वह व्यवस्था देती थी। आज का शिक्षक पुराने पोथी-पंचांगवाले ज्योतिषी या जोशी की तरह हो गया है। इसका परिणाम यह हो गया है कि काम तो उसका सबसे महत्त्वपूर्ण है, पर प्रतिष्ठा सबसे कम है। जैसे पुराने जमाने के मन्दिर का पुजारी है, उसी प्रकार विद्या के मन्दिर में बैठा हुआ शिक्षक भी है। राजा से लेकर रंक तक के बेटे जिसके पास जाते हैं, समाज में उसकी प्रतिष्ठा सबसे कम है।

इस परिस्थिति को कौन बदलेगा? मजदूरों ने कह दिया है कि अपनी परिस्थिति को हम बदलेंगे। किसानों ने भी यही कह दिया है। परन्तु शिक्षक यह नहीं कह पाया है कि अपनी परिस्थिति मैं बदलूँगा। जहाँ कहा भी है, वहाँ उसने किसान और मजदूर का अनुकरण किया है। अपने साधनों से अपनी परिस्थिति बदलने की बात नहीं कही।

स्कूल बनाम जेलखाना

शिक्षा के क्षेत्र में साधन क्या हैं? निशानी क्या हो? मनुष्यों के पेशों की भी निशानियाँ होती हैं। राजा की निशानी राजदण्ड है। सिपाही की निशानी तलवार है। पंडित की पोथी है। साहूकार की तिजोरी और व्यापारी की तराजू है। इसी प्रकार शिक्षक की निशानी क्या है? किसी स्कूल के लड़के से पूछा जाये तो वह बतायेगा कि पहले छड़ी थी, अब दण्ड है। तो इस पुलिस की निशानी में और शिक्षक में क्या फर्क है? स्कूलों का आरम्भ इसलिए हुआ था कि जेलखाने बन्द हो जायँ, पर अब स्कूल ही जेलखाने बन गये हैं।

जब साधारण मनुष्य मुझसे बाजार में कहता है कि इसके लिए सरकार जिम्मेदार है, मैं मान लेता हूँ। पर जब शिक्षक कहता है तो मैं हैरान रह जाता हूँ। इसलिए कि तू तो बैठा है, जिसके हाथ में सारी अगली पीढ़ी है। परन्तु शिक्षक में यह कहने की हिम्मत नहीं कि वह पुरुषार्थ मैं कर सकता हूँ, सत्ताधारी और सिपाही नहीं। शिक्षक जो कहेगा, लड़का मानेगा। सनातनी मनुष्य वेद को जितना प्रमाण मानता है, उतना लड़का शिक्षक को मानता है। इतनी प्रामाण्य बुद्धि शिक्षक के लिए है। वह पिता है, दार्शनिक है, तत्त्वज्ञ है, अभिभावक है, पालक है और अन्त में आज तो प्रहरी—पुलिसमैन—भी है। इतनी सारी हैसियत एक ही व्यक्ति में पूँजीभूत

हो गयी हो, वह सिवाय शिक्षक के और किसी में नहीं है। अब यह शिक्षक अपने को मजदूर मानता है, क्योंकि उसने विद्या को व्यवसाय माना है, व्यसन नहीं। व्यसन का दूसरा शब्द है शौक की चीज। विद्या का अध्ययन शिक्षक के लिए व्यसन नहीं है। इसलिए जिसका जो पेशा हो जाता है, उससे वह हमेशा छुट्टी चाहता है।

आप किसी विद्यार्थी से पूछिये शिक्षक क्या करता है? विद्या के सिवा वह सब कुछ करता है। जो उसका पेशा हो जाता है, उसकी अभिरुचि का विषय नहीं रह जाता।

शिक्षण और शासन

शिक्षण और शासन में अन्तर है। शिक्षण में शासन का जितना प्रवेश होता है, उतना शिक्षण कलुषित होता है। शासन में जितना शिक्षण का प्रवेश होगा, वह उतना उन्नत होता है। यह कौन करेगा? आप करेंगे। शिक्षा में जितना दण्ड का प्रवेश होगा, उतना विद्या देवी के मन्दिर में विद्या का प्रवेश कम होता जाता है। आज सारे शिक्षक और विद्यापीठ सत्ताभिमुख होते जा रहे हैं। सत्ताभिमुख का मतलब है दण्डाभिमुख। शिक्षण हुकूमत की तरफ जितना देखता जायेगा वह सजा और शासन को बढ़ायेगा। अनुशासन कम होता जायेगा। फिर हम सोचते रहेंगे समस्याओं को कि विद्यार्थियों में क्यों उच्छृङ्खलता आयी? शिक्षक क्यों अपने पेशे को ठीक नहीं समझता? बालक के पहले शिक्षक उसके माँ-बाप हैं, परन्तु उन्हें बच्चे के प्रति अपने कर्त्तव्य का भान नहीं। पालक की जहाँ यह स्थिति है, वहाँ जब हम शिक्षण की भूमिका का विचार करते हैं तो इस नतीजे पर आते हैं कि शिक्षण को शिक्षक बदलेंगे। राज्य उसे राज्यानुकूल बनायेगा। जिस पार्टी का राज्य होगा, उसी पार्टी के अनुकूल शिक्षण होगा।

शिक्षक में आत्म-प्रत्यय होना चाहिए, वह सिपाही से ज्यादा हो। सत्ताधारियों से भी ज्यादा होना चाहिए। राजनीतिज्ञ के लिए शिक्षण प्रचार का साधन है, मनुष्य के व्यक्तित्व के व्यक्तित्व का साधन नहीं।

शिक्षक की संस्कृति

हम सबके पेट हैं। तो क्या शिक्षकों के पेट नहीं हैं? लेकिन पेट भरने और भूख प्रकट करने का हरएक का तरीका उसकी संस्कृति के अनुकूल होता है। क्या शिक्षकों का अपना कोई तरीका है? वह तो नकल करता है। कभी मजदूरों की, कभी मिनिस्ट्री के लोगों की। इन मूल्यों को कौन बदलेगा? शिक्षक अगर समझता है कि सामाजिक मूल्यों का परिवर्तन राजा, सिपाही और संत करेगा, तो नहीं होगा। सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा शिक्षक करेगा। संत नहीं। संत चमत्कार कर सकता है, शिक्षक चमत्कार नहीं कर सकता है। कौन-सा विद्या-प्रेमी मनुष्य चमत्कार को स्वीकार करेगा? विद्या भ्रष्टाचार को सह नहीं सकती, जैसे दण्ड और शासन को नहीं सह सकती है। शिक्षा इन सबसे श्रेष्ठ है, इसलिए उसमें गवेषणा है, खोज है, अनुसंधान है और उसमें अखण्ड आनन्द है। इसलिए मैंने इसे व्यसन कहा है। इसकी खोज आवश्यक है, शिक्षकों के जीवन में और सबसे बड़ी है, आप गाँव के शिक्षकों के जीवन में, क्योंकि आप बुनियाद हैं। शिक्षक में अपार शक्ति है, वह बिगाड़ सकता है तो बना भी सकता है। वह सबसे बड़ा रचनात्मक कार्यक्रम है।

आपको तनख्वाहों के लिए झगड़ा करना है, सुविधाएँ लेनी हैं। शौक से कीजिये लेकिन शिक्षकों की शान समाज में समाप्त हो, इस तरह की किसी मर्यादा का भंग आपसे नहीं होना चाहिए। कुलीन स्त्री और गणिका, दोनों संघर्ष कर सकती हैं, पर दोनों के तरीके भिन्न हैं। शिक्षक की एक मर्यादा है, इसके विकार में भी संस्कृति प्रकट होती है। गुस्से में उसकी संस्कृति पहिचानी जाती है।

शिक्षक कलाकार होता है। जो कारीगर होता है, उसका एक आत्म-समाधान होता है। आत्मा का प्रसाद मनुष्य को अपनी वृत्ति में से मिलता है। विद्या शिक्षक का व्यसन भी है, वृत्ति भी है। उसे व्यवसाय होता है, उससे वृत्ति बनती है। आज शिक्षक की वृत्ति का उसके व्यवसाय के साथ कोई अनुबन्ध नहीं। मैं एक वैज्ञानिक सत्य आपके सामने रख रहा हूँ। जो व्यवसाय हो, उसके अनुकूल वृत्ति होनी चाहिए, तब उसमें से आत्म-प्रसाद मिलता है।

आपको इतिहास में यह देखकर गौरव होगा कि दुनिया में और इस देश में श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ व्यक्ति अपने जीवन के आरम्भ में शिक्षक रहे हैं और इन विभूतियों ने सारे देश की शक्ल बदल दी। आप लोगों में जितना सामर्थ्य है उतनी शासक और सैनिक में नहीं है। साहूकार में तो कभी रही ही नहीं है। आज आ गयी है, क्योंकि आज हर शिक्षक मनोवेग के सामने अपनी टोपी और तलवार के सामने पगड़ी रख देता है। आपको राजनीतिज्ञों के चकमे में नहीं आना चाहिए।

पेट है पर पेट के लिए झुकेंगे नहीं। यह तय करें। रोहिताश्व की कहानी आपने सुनी होगी। हरिश्चन्द्र डोम के नौकर थे। तारामती साहूकार के यहाँ नौकरी करती थीं, पर रोटियाँ साहूकार की नहीं खाती थीं। हरिश्चन्द्र की कमाई ही खाती थीं। हरिश्चन्द्र को दो रोटियाँ मिलती थीं। इनमें से एक रोहिताश्व को देते, आधी स्वयं खाते और आधी तारामती को देते। एक दिन ऐसी नौबत आयी कि दो रोटियों के लिए भी जवाब मिल गया। अंतिम दो रोटियाँ भी समाप्त हो गयीं। अपने-आप तो रह सकते थे, पर रोहिताश्व का क्या हो? रोहिताश्व ने सुना तो कहने लगा, ''पिताजी! जिस रोहिताश्व का पेट आपकी सत्यनिष्ठा को डावाँडोल कर सकता है, उस पेट को फेंक रहा हूँ।''

मित्रो! वह देश स्वतंत्र रहता है, जिस देश के नवयुवक में पेट फेंक देने की ताकत होती है। देश में हरएक को रोजगार चाहिए, यह संयोजन सबको मिलकर करना है। अवसर आने पर हरएक को पेट फेंक देना है। सती का बाना हर प्रतिष्ठित नागरिक का बाना है। शिक्षक की यह मर्यादा हो कि इज्जत के लिए पेट फेंक देंगे। शिक्षकों में मुट्ठीभर शिक्षक भी ऐसे निकल जायें तो इस देश में शिक्षण के सुधार के लिए कोई सत्याग्रह नहीं करना पड़ेगा। शिक्षण के क्षेत्र में क्रान्ति करनेवाला कौन होगा? शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति की विभूति शिक्षक होगा। ❑

गुरु की शिष्य-पूजा

❑ विनोबा

शालीन संकोच

एक अमेरिकन महिला ने विवेकानन्द के बारे में अपने संस्मरण एक छोटे-से लेख में लिखकर रखे थे। उन्हें 'प्रबुद्ध भारत' ने हाल ही में प्रकाशित किया है। लिखकर बहुत पहले ही रखे गये थे, परन्तु उस महिला की इच्छा थी कि वे उसकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हो। तदनुसार वे अब प्रकट किये गये हैं। वैसे, उनमें कोई खास गुप्त बात नहीं दिखायी देती, परन्तु आनुषंगिक रूप से उस स्त्री के उन्नत मन के दर्शन उनमें होते हैं। शायद उसकी यह सौजन्ययुक्त भावना रही हो कि मेरे जीते-जी यह लोगों के सामने न आये। विवेकानन्द जब अमेरिका गये थे, उस वक्त इस महिला से उनका परिचय हुआ था और अनंतर हिन्दुस्तान में भी वह कुछ दिन रहकर गयी थी।

उस स्त्री ने विवेकानन्दजी से पूछा कि क्या मैं हिन्दुस्तान में आऊँ? विवेकानन्द ने कहा, ''गन्दगी, दरिद्रता और चिथड़े देखने की इच्छा हो तो जरूर आओ। और कुछ देखने की कल्पना हो तो मत आओ। हमें आलोचना सहने के एक और प्रसंग में न डालो।''

दरिद्रनारायण शब्द

दरिद्र जनता के लिए विवेकानन्द का उत्कट स्नेह और भारत के विषय में उनके चित्त की आत्मीयता इस छोटे से उत्तर में भी स्पष्ट रूप से दिखायी देती है। 'दरिद्रनारायण' शब्द मूल में उन्हींका है। गांधीजी ने उसे उठा लिया और सेवा की मुहर लगाकर उसका चलता सिक्का बना दिया।

ज्ञानी का अनूठा लक्षण

विवेकानन्द के विषय में उक्त महिला ने अपना यह अनुभव बतलाया कि उनकी सन्निधि में जो कोई आता था, वह निर्भय होकर जाता था। लौटते समय वह ताजा-तर और बलवान होकर जाता था। इसका कारण उक्त महिला ने यह लिखा है कि विवेकानन्द को अपना खुद का बड़प्पन बिलकुल प्रतीत नहीं होता था। जो उनसे मिलने आता, वही उन्हें महान् लगता था। इस पर से यह महिला कहती है कि मैंने ज्ञानी पुरुष का लक्षण ही यह निश्चित किया है कि जिसकी सन्निधि में आदमी की हिम्मत बढ़ती है, वह ज्ञानी।

विवेकानन्द के भाषणों में इस सर्वत्र कमजोरी से चिढ़ और आत्म-विश्वास सर्वत्र लबालब भरा देखते हैं। उसका उक्त महिला के इस अनुभव से विरोध नहीं है, बल्कि दोनों का उत्तम मेल लग सकता है।

आध्यात्मिक की पूर्णता

निरहंकारता के समान बलवर्धक दूसरा कोई गुण है ही नहीं। ज्ञानदेव कहते हैं— ''जलचर चाहे जितना ऊधम क्यों न करें, तो भी समुद्र उससे नहीं उबता। और समुद्र चाहे कितना ही क्षुब्ध हो, तो भी जलचरों को उसका डर नहीं लगता।'' जिसके आध्यात्मिक प्रभाव से आस-पास के लोग चौंधिया जाते हैं, उसकी आध्यात्मिकता में उतनी त्रुटि समझनी चाहिए जिसकी संगति में सबको हिम्मत आती है, सहज भाव से स्वतंत्रता के साथ बरतना संभव होता है, उसकी आध्यात्मिकता पूर्णता को पहुँची है।

प्रचुर स्वयं-प्रकाशी और शीतल-तेज

विवेकानन्द प्रकृति से प्रखर ही थे। लेकिन जिस प्रकार कपूर की ज्योति सुलगाते ही वह देखते वहीं के वहीं समाप्त हो जाती है, उसी प्रकार उनकी प्रखरता महापुरुष के सहवास से काफूर हो गयी। और इसीलिए मैं समझता हूँ कि उस महिला को उनका यह अनुभव हुआ। विपुल तेज हो, वह स्वयंप्रकाशी हो और शीतल भी हो, यह न तो सूर्य को सधा और न चंद्र के लिए ही संभव हुआ। फिर अब उपमा कहाँ से लायें। इसलिए आखिर उपासकों ने ईश्वर के एक नेत्र को सूर्य और दूसरे को चंद्र मानकर संतोष कर लिया।

जिसको भाया उसके लिए

एक बार साँझ समय अंगीठी के पास बैठकर बातें हो रही थीं। उस वक्त विवेकानन्द ने कुछ विचार रखे। एक स्त्री बोली, ''आपके विचारों में से अमुक-अमुक विचार मुझे बिलकुल नहीं जँचा।'' विवेकानन्द ने कहा, ''सच? तो फिर वह विचार तुम्हारे लिए था ही नहीं।'' दूसरी स्त्री बोली, ''लेकिन मुझे तो ठीक वही विचार जँचा।'' विवेकानन्द ने कहा, ''तो फिर वह तुम्हारे ही लिए था, ऐसा समझो।''

सर्व-संग्राहक अद्वैत-वृत्ति

कई वर्ष हुए, जब मैं काशी में था तब एक विद्वत्सभा में चर्चा सुनने को गया था। वाद का विषय था—''द्वैत् सच है या अद्वैत्।'' ग्रंथों से बड़े-बड़े प्रमाण निकले। अंत में द्वैत ही पराभूत हुआ और अद्वैत ही जीता। मैंने अपने मित्र से कहा, ''आज के जैसी अद्वैत की पराजय मैंने कभी नहीं देखी थी।'' बाद में गौड़पाद की कारिकाएँ मेरे पढ़ने में आयीं। मैंने देखा कि मुझ अजान का मत ही गौड़पाद ने मान्य किया था। गौड़पाद ने कहा, ''जिस प्रकार नदियाँ सहज ही समुद्र में समा जाती हैं, उस प्रकार सारे वाद जिसके अन्दर में समाते हैं, वही अद्वैत है। जैनों का अनेकान्तवाद भी यही है।''

भगिनि निवेदिता भारतीय रीति के अनुसार सिर्फ हाथों से, यानी बगैर काँटे-चम्मच के, भोजन किया करती थीं। विवेकानन्द की मृत्यु के दो दिन पहले की बात है। वे खाकर उठीं। दूसरा कोई पास नहीं था, इसलिए स्वामी स्वयं उनके हाथ धुलाने लगे। बहन →

गाँवों पर शहर की विलासिता का प्रभाव-2

❑ टॉल्सटॉय

एक बूढ़ा बावरची गाँव से बाहर आकर शराब पीने का आदी बन गया और बीमार पड़ गया। एक दरबान भी, जो पहले बहुत शराब पीता था, किन्तु जो गाँव में रहते हुए पिछले पाँच वर्ष से अपने को नशे से बचाता आया था, मास्को आकर फिर शराब पीने लगा और इसी में उसने अपना सारा जीवन नष्ट कर डाला। गाँव में तो उसकी स्त्री उसे शराब पीने से रोकती रहती थी; किन्तु शहर में वह अकेला ही रहता था और उसे रोकनेवाला कोई नहीं था। हमारे गाँव का एक लड़का मेरे भाई के यहाँ नौकरी करता है। जब मैं गाँव गया था, तो एक दिन उसका अंधा दादा मेरे पास आया और बोला—''बाबूजी, किसी तरह मेरे पोते को शर्मिन्दा करके टैक्स के लिए दस रूबल भिजवा दो, नहीं तो मुझे अपनी गाय बेचनी पड़ेगी।'' बूढ़े ने आगे कहा—''वह हमेशा यही कहता है कि शहर में अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने पड़ते हैं उसने बूट खरीद लिये हैं। इतना ही बहुत है; लेकिन मेरा खयाल है कि अब वह घड़ी खरीदने की धुन में है।'' बूढ़े ने यह बात इस तरह कही, जैसे उसकी राय में घड़ी खरीदने से बढ़कर और कोई पागलपन हो ही नहीं सकता। निस्सन्देह यदि लोगों को यह मालूम हो जाय कि बेचारे बूढ़े को लेन्ट के व्रत में खाने के साथ तेल तक मयस्सर नहीं हुआ था और एक रूबल तथा बीस कोपेक का ऋण न भर सकने के कारण उसकी काटी हुई लकड़ी उसके हाथ से निकली जा रही है तो उन्हें उसके पोते का घड़ी खरीदने का प्रस्ताव पागलपन ही जँचेगा। बाद में पता चला कि बूढ़े का आक्षेप ठीक था। उसका पोता बढ़िया कपड़े का काला ओवरकोट और बूट पहने मेरे पास आया। ये बूट उसने आठ रूबल में खरीदे थे। कुछ दिन पहले उसने मेरे भाई से दस रूबल पेशगी लिये थे और उन्हीं से वह बूट खरीदकर लाया था। मेरे लड़कों ने, जो उसे बचपन से जानते हैं, मुझे यह भी बतलाया कि घड़ी खरीदना वह सचमुच अपने लिए आवश्यक समझता है। लड़का बहुत अच्छे स्वभाव का है, किन्तु समझता है कि जब तक उसके पास घड़ी नहीं होगी, तब तक लोग उसकी हँसी उड़ाते रहेंगे, इसलिए घड़ी उसके लिए जरूरी है। इस साल हमारे यहाँ की एक अठारह वर्ष की नौकरानी का साईस के साथ सम्बन्ध हो गया। इस पर उसे हमने निकाल दिया। इस बात की चर्चा जब मैंने अपनी बूढ़ी धाय से की, तो उसने मुझे एक और दुखिया लड़की की याद दिलायी, जिसे मैं भूल गया था। दस साल पहले जब हम कुछ दिनों के लिए मास्को रहे थे, तब उसका भी एक दरवान से सम्बन्ध हो गया था और उसे भी हमने नौकरी से अलग कर दिया था। अन्त में वह एक वेश्यालय में जा पहुँची थी और अपने जीवन का बीसवाँ वर्ष पूरा करने से पहले ही उपदंश रोग से पीड़ित होकर एक अस्पताल में मर गयी थी। यदि हम उन मिलों और कारखानें को छोड़ दें, जो हमारे लिए भोग-विलास की सामग्री तैयार करने में निरन्तर रत रहते हैं, तो भी हम अपनी चारों ओर उस छूत को देखकर दहल उठेंगे, जो हम अपनी विलासिता द्वारा ठीक उन्हीं लोगों में प्रत्यक्ष रूप से फैलाते हैं, जिनकी बाद में हम सहायता करना चाहते हैं।

इस प्रकार जिस नागरिक दरिद्रता को दूर करने में मैं असमर्थ रहा था, उसके स्वरूप का अध्ययन करने पर मुझे उसके दो कारण दिखायी दिये—पहला तो यह है कि मेरे-जैसे लोग गाँववालों की आवश्यकता की चीजें एकत्र कर शहर ले आते हैं और दूसरा यह कि शहर में हम गाँवों से बटोरी हुई सम्पत्ति के बल पर ऐश-आराम करते हैं और अपनी विलासिता से उन ग्रामीणों को ललचाते तथा भ्रष्ट करते हैं, जो गाँव से लायी गयी वस्तु को किसी-न-किसी प्रकार वापस ले जाने के लिए हमारे पीछे-पीछे शहर आते हैं। ❑

→

निवेदिता के मन में विवेकानन्द के लिए गुरु-भावना थी। वे बोलीं, ''मुझसे तुम्हारी यह बात सही नहीं जाती।'' विवेकानन्द बोले, ''ईसा ने तो अपने शिष्यों के पाँव धोये।''

एक-दूसरे के आराध्य द्वैत

शिष्य के लिए गुरु से बढ़कर आदरणीय द्वैत नहीं है। परंतु गुरु के लिए भी शिष्य से बड़ा आराध्य द्वैत नहीं है। कौन किसका गुरु, और कौन किसका शिष्य? जिस प्रकार मित्र एक-दूसरे के मित्र होते हैं, इसका वह और उसका यह, उसी प्रकार गुरु-शिष्य एक दूसरे के गुरु-शिष्य होते हैं। इसका वह और उसका यह।

एक बार भगवान् से मिलने उद्धव आये। भगवान् अपने पूजा-घर में पूजा करने बैठे थे। उद्धव को कुछ देर ठहरना पड़ा। पूजा पूरी होने पर भगवान् उद्धव से मिले। उद्धव ने पूछा, ''आप इतनी देर क्या कर रहे थे?''

''पूजा कर रहा था।''

''किसकी?''

''यह तुम नहीं जानते। वह हमारा रहस्य है!''

''नहीं जानता, इसीलिए तो पूछता हूँ। मुझसे छिपाकर क्या रखोगे!''

''ठीक! तो बताता हूँ, सुन। मैं तेरी ही पूजा कर रहा था।'' ('सर्वोदय' फरवरी, 1950 से)

प्रस्तुति : बद्रीनाथ सहाय

बढ़ते तापमान से सुलगती आर्थिक संरचनाएँ

❑ टिम रेडफोर्ड

जलवायु परिवर्तन के कारण अब गम्भीरता के साथ संसाधनों के पुनर्वितरण औ संपदा के पुर्नआवंटन की संभावना तो बढ़ती जा रही है, परन्तु इस प्रक्रिया के न्यायायोचित ढंग से अन्तिम परिणाम तक पहुँचने में शंका है। शोधकर्ताओं का मानना है कि यह सब राबिनहुड की प्रसिद्ध दँतकथा के विपरीत होगा यानी कि अब संपदा व धन गरीबों से लूटकर अमीरों को दे दिया जायेगा। इसके बावजूद अमीर भी संभवतः स्वयं को अमीर महसूस नहीं कर पायेंगे। एक स्पष्ट उदाहरण के माध्यम से वैज्ञानिक लगातार इस बात की चेतावनी दे रहे हैं। उनके अनुसार मछलियों एवं अन्य जलीय जलचर अब भूमध्य से ध्रुवों की ओर कूच करने लगे हैं क्योंकि उष्णकटिबंधीय क्षेत्र ज्यादा तप रहा है और यह विस्तारित भी होता जा रहा है। इसका सीधा-सा अर्थ है कि कम से कम एक मूल्यवान संसाधन अब विश्व के सर्वाधिक गरीब देशों से निकलकर उन समुदायों की ओर जा रहा है जो कि तुलनात्मक रूप से अधिक समृद्ध हैं। गौरतलब है कि दुनिया की अधिकांश आर्थिक महाशक्तियाँ कम तापमानवाले क्षेत्र में ही स्थित हैं।

अमेरिका स्थित याले वानिकी एवं पर्यावरण शिक्षण विद्यालय में बायो इकॉनामिक्स एवं इकोसिस्टम के सहायक प्रोफेसर इलि फेनिचेल का कहना है कि ''लोगों का ध्यान मुख्यतः इन संपत्तियों के भौतिक पुर्नआवंटन पर ही केंद्रीत है। मुझे नहीं लगता कि हम लोगों ने इस दिशा में सोचना प्रारंभ किया है कि किस प्रकर जलवायु परिवर्तत संपदा का पुर्नआवंटन करवा सकता है और उन संपदाओं के मूल्यों (कीमत) को प्रभावित कर सकता है। हम सोचते हैं कि मूल्यों का प्रभाव अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।'' पिछले महीने ही डॉ. फेनिचेल ने 'वास्तविक नकद मूल्य' की गणना की एक विधि खोजी है, जिसे पर्यावरणविद 'प्राकृतिक संपदा' कहते हैं। अब उन्होंने और उनके साथियों ने 'प्रकृति जलवायु परिवर्तन' का अध्ययन प्रारंभ किया है और यह विचार करना प्रारंभ किया है कि यह नकद राशि अंततः कहाँ जाकर इकट्ठा होगी। वैसे उनके पास तत्काल इसका कोई उत्तर नहीं है।

वह कहते हैं, ''हम नहीं जानते कि यह किस तरह सामने आयेगा, परन्तु हम यह तो जानते हैं कि इसका मूल्यों पर प्रभाव अवश्य पड़ेगा। मूल्य (कीमतें) मात्रा और कमी को दर्शाता है और प्राकृतिक पूँजी को लेकर लोगों का कहीं और पलायन बहुत ही दुष्कर है। परन्तु यह उसी तरह अपरिहार्य है जिस तरह मछलियों की प्रजातियों का आवागमन।'' शोधकर्ता अत्यन्त सचेत होकर कह रहे हैं कि ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन जनित यह जलवायु परिवर्तन जो कि पिछली शताब्दी या उससे थोड़े अधिक समय से जीवाष्म ईंधन के अत्यन्त दुरुप्रयोग से बढ़ता जा रहा है, की वजह से प्राकृतिक पूँजी का पुर्नआवंटन हो सकता है, सभी प्रकार की पूँजी के मूल्य में परिवर्तन हो सकता है और इससे संपदा का व्यापक स्तर पर पुनर्वितरण संभव हो सकता है। उनका मानना है कि हालाँकि यह स्पष्ट नहीं है कि बेहतर आर्थिक स्थितिवाले प्राकृतिक पूँजी के संभाव्य परिवर्तन जैसे मछलियों के निवास स्थान में परिवर्तन होने से अनिवार्यतः लाभान्वित होंगे ही होंगे। उत्तरी विश्व के अधिकांश मछली मारनेवाले बंदरगाहों पर इच्छित प्रजातियों के अन्तर्वाह का वास्तविक प्रभाव यह पड़ेगा कि पकड़ी गयी मछली का मूल्य वास्तव में घट जायेगा। डॉ. फेनिचेल का कहना है कि ''यदि उत्तरी समुदाय विशेष रूप से अच्छे प्रबंधकों जैसा कार्य नहीं करेंगे तो जिस असाधारण संपत्ति के वे वारिस हैं उसकी कीमत बहुत कम आँकी जाने लगेगी। ऐसे में उनका एकत्रीकरण भी कम होता जायेगा।''

संपन्न ही लाभ में : यह तो स्पष्ट है कि उन्हें ही ज्यादा फायदा हो रहा है जो ज्यादा संपन्न हैं। जिनसे छिन रहा है वे उनसे बहुत ज्यादा खो रहे हैं, जितना ही फायदा लेनेवालों को मिल रहा है। अंत में पानेवाले भी खोने वालों के मुकाबले बहुत अधिक अर्जित नहीं कर पायेंगे। अंततः होगा यही कि संपदा का कुशल पुर्नआवंटन संभव नहीं हो पायेगा।

जलवायु वैज्ञानिक इस बात की लगातार चेतावनी देते रहे हैं कि जलवायु परिवर्तन गरीबों पर सबसे कठेर मार करेगा। उदाहरण जलवायु परिवर्तन की वजह से विश्व के सूखे क्षेत्रों के और अधिक सूख जाने की आशंका है और विश्व के तमाम निर्धनतम लोग अभी से ही इस तरह का दबाव महसूस करने लगे हैं। उष्णकटिबंधीय वन एवं समुद्री चट्टानें जैव विविधता संबंधी 'प्राकृतिक पूँजी' में अधिक समृद्ध हैं, परन्तु वैश्विक तापमान वृद्धि से इनमें से कुछ के सामने खतरा पैदा हो गया है। रूटगेर्स विश्वविद्यालय के एक पर्यावरणविद् और उपरोक्त रिपोर्ट के सह लेखक मालिन प्लिन्सिकी का कहना है, ''हम अब तक यही सोचते थे कि जलवायु परिवर्तन मात्र भौतिकशास्त्र और जीवशास्त्र संबंधी समस्या है। परंतु अब लोगबाग भी जलवायु परिवर्तन पर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। परंतु हाल फिलहाल हमारे पास जलवायु परिवर्तन से प्रभावित प्राकृतिक संसाधनों की वजह से मनुष्य के स्वभाव पर पड़नेवाले प्रभाव को लेकर बेहतर समझ मौजूद नहीं है।'' (सप्रेस/थर्ड वर्ल्ड नेटवर्क फीचर्स)

पर्यावरणीय संकट

❑ भारत डोगरा

वैज्ञानिक जगत में अब इस बारे में व्यापक सहमति बनती जा रही है कि धरती पर जीवन को संकट में डालनेवाली अनेक गंभीर पर्यावरणीय समस्याएँ दिनोंदिन विकट गंभीर होती जा रही हैं। इनमें जलवायु का बदलाव सबसे चर्चित समस्या है। परंतु इसी के साथ अनेक अन्य गंभीर समस्याएँ भी हैं जैसे समुद्रों का अम्लीकरण या एसिडिफिकेशन व जलसंकट। ऐसी अनेक समस्याओं का मिला-जुला असर यह है कि इनसे धरती पर पनप रहे विविध तरह के जीवन के अस्तित्व मात्र के लिए संकट उपस्थित हो गया है। विविध प्रजातियों के अतिरिक्त इस संकट की पहुँच मनुष्य तक भी हो गयी है।

इन पर्यावरणीय समस्याओं के अतिरिक्त एक अन्य वजह से भी धरती पर जीवन के लिए गंभीर संकट उपस्थित हुआ है और वह है महाविनाशक हथियारों के बड़े भंडार का एकत्र होना व इन हथियारों के वास्तविक उपयोग की या दुर्घटनाग्रस्त होने की बढ़ती संभावनाएँ। इन दो कारणों से मानव इतिहास में पहली बार मानव निर्मित कारणों की वजह से जीवन के अस्तित्व मात्र के लिए गंभीर संकट उत्पन्न हुआ है। हम इसे अस्तित्व का संकट भी कह सकते हैं।

मानव इतिहसास के सबसे बड़े सवाल न्याय, समता और लोकतंत्र के रहे हैं। अब जब अस्तित्व की बड़ी चुनौती सामने है तो इसका सामना भी न्याय, समता और लोकतंत्र की राह पर ही होना चाहिए। अस्तित्व का संकट उपस्थित करनेवाले कारणों को दूर करना निश्चय ही सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए, पर अभी तक इन समस्याओं के समाधान का विश्व नेतृत्व का रिकार्ड बहुत निराशाजनक रहा है। इस विफलता के कारण इस संदर्भ में जनआंदोलनों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण हो गयी है। यहाँ पर एक बड़ा सवाल सामने है कि अनेक समस्याओं के दौर से गुजर रहे यह जनांदोलन इस बड़ी जिम्मेदारी को कहाँ तक निभा पायेंगे।

ऐसी अनेक समस्याओं के बावजूद इस समय की माँग है कि जनआंदोलन अपनी इस बहुत महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा से निभाने का अधिकतम प्रयास अवश्य करें। इसके लिए एक ओर तो यह बहुत जरूरी है कि जनआंदोलनों में व्यापक आपसी एकता बने तथा दूसरी ओर यह भी उतना ही जरूरी है कि आपसी गहन विमर्श से बहुत सुलझे हुए विकल्प तैयार किये जायें।

विश्व स्तर पर पर्यावरण संबंधी आंदोलनों का जनाधार इस कारण व्यापक नहीं हो सका है क्योंकि इसमें न्याय व समता के मुद्दों का उचित ढंग से समावेश नहीं हो पाया है। जलवायु बदलाव के संकट को नियंत्रण में करने के उपायों में जनसाधारण की भागीदारी प्राप्त करने का सबसे असरदार उपाय यह है कि विश्व स्तर पर ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन में पर्याप्त कमी वह भी उचित समयावधि में लाये जाने की ऐसी योजना बनायी जाय जो सभी लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने से जुड़ी हो। तत्पश्चात इस योजना को कार्यान्वित करने की दिशा में तेजी से बढ़ा जाय।

यदि इस तरह की योजना बनाकर कार्य होगा तो ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन में कमी के जरूरी लक्ष्य के साथ-साथ करोड़ों अभावग्रस्त लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने का लक्ष्य अनिवार्य तौर पर इसमें जुड़ जायेगा व इस तरह ऐसी योजना के लिए करोड़ों लोगों का उत्साहवर्धन समर्थन भी प्राप्त हो सकेगा। यदि गरीब लोगों के लिए जरूरी उत्पादन को प्राथमिकता देनेवाला नियोजन न किया गया तो फिर विश्व स्तर पर बाजार की माँग के अनुकूल ही उत्पादन होता रहेगा। वर्तमान विषमताओंवाले समाज में विश्व के धनी व्यक्तियों के पास क्रय शक्ति बेहद अन्यायपूर्ण हद तक केंद्रित है। अतः बाजार में उनकी गैर-जरूरी व विलासिता की वस्तुओं की माँग को प्राथमिकता मिलती रहेगी। जिससे अंततः इन्हीं वस्तुओं के उत्पादन को प्राथमिकता मिलेगी। सीमित प्राकृतिक संसाधनों व कार्बन स्पेश का उपयोग इन गैरजरूरी वस्तुओं के उत्पादन के लिए होगा। गरीब लोगों की जरूरी वस्तुएँ पीछे छूट जायेंगी, उनका अभाव बना ही नहीं रहेगा और बढ़ जायेगा।

अतः यह बहुत जरूरी है कि ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की योजना से विश्व के सभी लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने की योजना को जोड़ दिया जाय व उपलब्ध कार्बन स्पेश में बुनियादी जरूरतों को प्राथमिकता देने की एक अनिवार्यता बना दी जाय। इस योजना के तहत जब गैरजरूरी उत्पादों को प्राथमिकता से हटाया जायेगा तो यह जरूरी बात है कि सब तरह के हथियारों के उत्पादन में बहुत कमी लायी जायेगी। मनुष्य व अन्या जीवों की भलाई की दृष्टि से देखें तो हथियार न केवल सबसे अधिक गैरजरूरी हैं अपितु सबसे अधिक हानिकारक भी हैं। इसी तरह के अनेक हानिकारक उत्पाद हैं (शराब, सिगरेट, कुछ बेहद खतरनाक केमिकल्स आदि) जिनके उत्पादन को कम करना जरूरी है।

इस तरह की योजना पर्यावरण आंदोलन को न्याय व समता आन्दोलन के नजदीक लाती है व साथ ही इन दोनों आंदोलनों को शान्ति आंदोलन के नजदीक लाती है। जब ये तीनों सरोकार एक होंगे तो दुनिया की भलाई के कई महत्त्वपूर्ण कार्य आगे बढ़ेंगे। (सप्रेस)

जल संरक्षण : बाध्यकारी नियम

❑ श्रीपाद धर्माधिकारी

पिछली किश्त में हमने ताप विद्युत संयंत्रों में पानी संबंधी बाध्यकारी नियम जो जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा लगू किये गये थे, की विवेचना की थी। अब हम इसके प्रभावों पर विचार करेंगे। यह त्रासद है कि उदार सीमाओं के बावजूद कार्यरत विद्युत संयंत्रों के लिए आवश्यक हो जाता है कि वे नये मानकों के पालन सुनिश्चित करें, क्योंकि नये नियमों द्वारा उदार सीमा रखे जाने के बावजूद संयंत्रों द्वारा वर्तमान में किये जा रहे पानी के उपयोग को लेकर महत्त्वपूर्ण सुधार होंगे। विद्युत संयंत्र अभी प्रस्तावित नये मानकों से कहीं ज्यादा पानी का उपयोग करते हैं, जो कि वर्तमान आधिकारिक तकनीकी अनुशंसा की सन् 2012 की रिपोर्ट के अनुसार पुराने ताप विद्युत संयंत्र 5 से 7 लीटर पानी प्रति किलोवाट उपयोग करते थे। बाद की परियोजनाएँ दर्शाती हैं, उनमें से अनेक 4 लीटर पानी प्रति किलोवाट प्रयोग में लाती हैं। वास्तविकता यह है कि अनेक प्रस्तावित एवं निर्गाणाधीन संयंत्र जो कि जनवरी 2017 के बाद चालू होंगे, सुपर क्रिटिकल तकनीक पर आधारित हैं। अतएव उनके डिजाइन में परिवर्तन या निर्माण के बीच बदलाव की आवश्यकता इसलिए पड़ेगी क्योंकि उन्हें सुपर क्रिटिकल तकनीकों द्वारा प्रदत्त लाभों के अनुरूप तैयार नहीं किया गया है जिसमें कि पानी का कम उपयोग भी शामिल है।

यदि परिवर्तन कर लिया जाता है तो यह संयंत्र पानी का कम इस्तेमाल करेंगे, राख को सूखा ही इकट्ठा करेंगे और 100 प्रतिशत फ्लायएश का प्रयोग करेंगे। इस तरह से वे नये नियम अर्थात् 2.5 लीटर प्रति लीटर के प्रस्तावित मानदंड तक पहुँच पायेंगे। इससे उनकी वित्तीय लागतपर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। इस संबंध में कोई आधिकारिक अनुमान तो उपलब्ध नहीं है, परंतु इससे संबंधित कई अन्य रिपोर्ट (गैर सरकारी) उपलब्ध हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार सिर्फ एन.टी.पी.सी. को अपने पुराने एवं नये संयंत्रों को नियमानुकूल बनाने हेतु 20,000 करोड़ रुपये खर्च करने पड़ेंगे। इससे उपभोक्ता को प्रति यूनिट 50 से 60 पैसे अतिरिक्त भुगतान करना पड़ सकता है। दूसरी रिपोर्ट इसे कम बता रही है। उनके हिसाब से सभी विद्युत संयंत्रों की कुल लागत में 2,00,000 करोड़ रुपया (दो लाख करोड़ रुपया) तक की वृद्धि हो सकती है। गौरतलब है इन लागतों में सिर्फ पानी के उपयोग के मानक ही शामिल नहीं हैं बल्कि नये वायु प्रदूषण उत्सर्जन मानक भी शामिल हैं। इसके अलावा विद्युत संयंत्रों पर नवीनीकरण के दौरान संयंत्र को बंद करने से होनेवाली हानि (राजस्व हानि) की गणना भी करनी होगी।

यह तय है कि इन लागतों की वजह से बिजली की कीमतों में भी वृद्धि होगी। हमें इसे इस तरह देखना चाहिए कि यह ऐसी लागत है जो कि अभी किसी और के द्वारा वहन की जा रही थी। यह सही दिशा में उठा एक कदम है जिसका कि स्वागत किया जाना चाहिए। इस दिशा में अभी और बहुत कुछ किया जाना आवश्यक है जिसमें कोयला धोने का भार, राख का प्रबंधन आदि शामिल हैं। इससे विद्युत उत्पादन की वास्तविक लागत सामने आयेगी।

उद्योग की प्रतिक्रिया : इन नियमों के संबंध में अभी तक कम से कम सार्वजनिक मीडिया में विद्युत उत्पादन उद्योग की बहुत सीमित प्रतिक्रिया आयी है। हालाँकि हाल ही में हुए एक सम्मेलन में उद्योग के अनेक प्रतिनिधियों ने अपनी चिंता व्यक्त की है।

इनमें निम्न शामिल हैं—

इन परिवर्तनों के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधन जुटाने में परेशानी।

वितरण कंपनियों एवं उपभोक्ताओं द्वारा अधिक टेरिफ को अपनाने में समस्या।

उपकरण आपूर्तिकर्ताओं की इतनी क्षमता नहीं है कि वे माँग में आयी एकाएक तेजी की भरपाई कर पायें और एक ही समय में इतने उपकरण दे पायें।

हालाँकि इसी सम्मेलन में कुछ प्रतिनिधियों ने सुझाया कि उपकरण निर्माताओं के पास काफी क्षमता है, खासकर यदि हम अंतर्राष्ट्रीय एवं चीज के आपूर्तिकर्ता से अपनी माँग पूरी करने को कहें। उद्योग जगत की प्रतिक्रियाएँ तयशुदा पूर्वाग्रहों पर ही आधारित हैं। इस बात से बचा नहीं जा सकता कि स्वच्छ पर्यावरण चाहते हैं तो हमें इस लागत को तो आत्मसात करना ही होगा। वैसे भी ये कोई नयी लागते नहीं हैं। इन्हें अभी तक कोई अन्य जैसे कोयला खदान एवं विद्युत संयंत्रों के निकट रहे समुदाय अपने स्वस्थ्य एवं उनके जीवन की घटती गुणवत्ता के रूप में भुगतते रहे हैं।

पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से उम्मीदें : इन नियमों की अंतिम परीक्षा इनके क्रियान्वयन के दौरान होगी। इस हेतु तीन महत्त्वपूर्ण चीजें आवश्यक हैं। सर्वप्रथम, इस बात की आवश्यकता है कि उद्योग इन मानदंडों को मूर्त रूप देने हेतु तैयार हों। दूसर, यह कि सरकार विशेषकर : केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण एवं पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के पास इन्हें लागू करवाने हेतु राजनीतिक इच्छा शक्ति हो। तीसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष है कि इसमें नागरिकों का सचेत हस्तक्षेप अनिवार्य है। अंत में इतना ही कि मंत्रालय पूर्ण पारदर्शिता बरतें एवं सभी जानकारियों को सार्वजनिक परिवीक्षा में उपलब्ध रखें। यदि मंत्रालय ऐसा करता है तो लोगों, स्थानीय समुदायों एवं प्रभावितों की इन नियमों के क्रियान्वयन संबंधी भागीदारी में जबरदस्त मदद मिलेगी और इनके प्रभाव में भी वृद्धि होगी। वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को धन्यवाद देना चाहिए कि उन्होंने पहली बार ताप विद्युत संयंत्रों पर पानी के प्रयोग को लेकर कानूनी बाध्यता वाले नियमों को लागू किया है। (सप्रेस)

पर्यावरण – एक रिपोर्ट

जिस प्रकृति की गोद में मानव जाति रहती है, उसको पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरण के कई रंग होते हैं—जैसे कि जल, जंगल, जमीन, हवा इत्यादि। मानव समाज जैसे-जैसे प्रगति की राह अपनाता है, वैसे ही पर्यावरण पर असर पड़ता है जैसे कि 70 के दशक में ही नदियों की अवस्था क्रमशः खराब होती जा रही थी, इन्दौर में शिप्रा, शहडोल में सोन और हैदराबाद में मूसी जैसी नदियों में मरी हुई मछलियाँ तैरती हुई पायी गयीं। यहाँ तक कि मुंगेर के पास पेट्रोलियम कारखाने की बगल से बहती हुई गंगा में एक दिन आग लग गयी, इसलिए 1979 में केन्द्रीय सरकार ने जल प्रदूषण अधिनियम पारित किया। कुछ वर्षों बाद वायु की भी अवस्था बिगड़ने लगी और महानगरों में साँस की बीमारियाँ बढ़ने लगीं। तब वायु प्रदूषण अधिनियम पारित हुआ और 1982 में भोपाल में गैस के रिसने से कई हजार लोग मारे गये। तब 1984 में पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम पारित हुआ। इसके कई साल पहले वन संरक्षण अधिनियम पारित हो चुका था। इन सबके बावजूद आज भारत में कोई ऐसी नदी नहीं है जो ''ए'' क्लास की कही जा सकती हो—यानी कि जिसमें से इन्सान सीधे पानी पी सकता हो। इसी प्रकार प्रदूषण मंडल द्वारा करीब 100 शहरों में वायु अनुमापन में पाया गया कि कोई ऐसा बड़ा शहर नहीं है जहाँ वायु की गुणवत्ता स्वास्थ्य के अनुकूल हो। जंगलों के विषय में यह माना जाता है कि कम से कम एक तिहाई भूमि वनों से भरपूर हो। परन्तु पूरे भारत में वनों का इतना दोहन हुआ है कि मुश्किल से 18 प्रतिशत भूमि पर वन है और जगह-जगह पर हरित क्रांति से प्रभावित भूमि में इतनी भारी मात्रा में रासायनिक खाद कीटनाशक डाला गया है कि उस जमीन की उर्वरक शक्ति समाप्त हो गयी है। इतने मटमैले प्रदूषित वातावरण में जानवरों और पक्षियों की कई प्रजातियाँ भी हमेशा के लिए समाप्त हो गयी हैं, मोर और हाथी को बचाने के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम भी इन दो जीवों को बचा नहीं पा रहे हैं और उनकी संख्या दिन प्रतिदिन घटती जा रही है। वास्तव में ''विकास'' के नाम पर जितनी भी गतिविधियाँ चल रही हैं वे सब हमारी नैसर्गिक धरोहर को नष्ट करती जा रही हैं। हम जितना पानी इस्तेमाल करते हैं उतना ही उसे गन्दा भी करते हैं। जितनी गाड़ियाँ चलती हैं और कारखाने खुलते हैं, उतनी ही हवा विषैली हो जाती है। जितना खेती का विस्तार होता है और आबाद इलाके फैलते जाते हैं उतने ही जंगल कटते हैं।

देश और दुनिया के सामने अनेक प्रश्न हमारे व्यक्तिगत व्यवहार व व्यवस्थागत कमियों के कारण उपस्थित हुए हैं। आज हम अपने देश व दुनिया का भविष्य बहुत उज्जवल नहीं देख पा रहे हैं। देश में बाहरी आक्रमणों के साथ-साथ आन्तरिक कमी-कमजोरियाँ बड़े पैमाने पर बढ़ी हैं। उसका नतीजा यह हुआ कि आज के विकास की दौड़ में भागते-भागते हमने देश और दुनिया को विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया है। हर व्यक्ति को अपने अस्तित्व को बचाने की चिन्ता सताने लगी है।

लेकिन केवल अपनी-अपनी व्यक्तिगत जीने की चिन्ता करने से समस्या का हल निकलनेवाला नहीं है। समस्याओं का स्वरूप इतना बड़ा हो गया है कि इससे कोई अछूता नहीं रह सकता।

1. दुनिया भर में पीने के पानी का संकट सबसे बड़े पैमाने पर उभर कर सामने आया है। आजकल सभी विचारक कहते हैं कि दुनिया में तीसरा महायुद्ध पीने के पानी के सवाल पर होगा।

2. हमारी आज की केन्द्रित उद्योग नीति, डीजल पेट्रोल के साधनों का बड़े पैमाने पर उपयोग, जंगल की बेतहाशा कटाई व कचरे के अव्यवस्थापन के कारण वातावरण में प्रदूषण की मात्रा बढ़ रही है। उसके तहत ऑक्सीजन घटकर कार्बन का प्रमाण बढ़ रहा है, जिससे दुनिया में गर्मी का प्रमाण भी बढ़ा है। वातावरण में बदलाव आने के कारण खेती की उपज पर प्रभाव पड़ रहा है, उत्पादन दिन-दिन घट रहा है, रोगों का प्रमाण भी बढ़ रहा है।

3. गाँव के लोगों को अपने ग्राम विकास के संवैधानिक अधिकार व आर्थिक अधिकार आजादी के अड़सठ वर्षों के बावजूद अभी तक प्राप्त नहीं हुए। गाँव अभी भी राज्य व केन्द्र की गुलामी में जी रहे हैं, खतम हो रहे हैं।

हम सबको इस पर सोचना चाहिए व अपने उज्जवल भविष्य की दृष्टि से कुछ कदम भी उठाने चाहिए। बनवासी सेवा आश्रम पिछले पचास से ज्यादा वर्षों से यही बात अनेक विध तरीकों से क्षेत्र के गामीणों को, शहरी लोगों को व सम्बन्धित अधिकारियों के समक्ष रखकर लड़ाई मजबूत करने में प्रयासरत है। हम चाहते हैं कि हम इस परिस्थिति को समझें व समझकर इसे बदलने के लिए अपने व्यक्तिगत स्तर पर व सामूहिक व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई खड़ी करने में सहभागी बनें।

सिंगरौली क्षेत्र में कोयले से बिजली उत्पादनः

1. आज सिंगरौली क्षेत्र में 20.570 मेगावॉट बिजली पैदा करने के विद्युत ताप गृह लगाये जा चुके हैं, जिनका 72 प्रतिशत उपयोग किया जा रहा है।
2. 1000 मेगावॉट बिजली के लिए 18000 टन अर्थात् 1800 ट्रक कोयला जलाना पड़ता है।
3. सिंगरौली क्षेत्र में 2,74,000 टन कोयला रोज जलाया जा रहा है।
4. यहाँ के कोयले में फ्लोराइड जैसी भारी

तत्व नाइट्रेट व सल्फेट्स जैसी गैसीय तत्व काफी मात्रा में पाये जाते हैं जो कोयला जलाने के साथ लगातार हवा में मिल रहे हैं।

5. कोयला जलने के बाद 28-40 प्रतिशत फ्लाईऐश निकलती है (अर्थात् लगभग 14000 ट्रक राख) इसमें से काफी हिस्सा ऐश डैम पंतसागर में जाता है।
6. 1960 में पंतसागर में 890 फीट स्तर तक पानी खड़ा हो सकता था, अब मात्रा 870 फीट स्तर तक पानी खड़ा हो सकता है।
7. 1960 में सोनभद्र में 40 इंच औसत वर्षा होती थी अब 18-20 इंच वर्षा हो रही है।

ये आँकड़े तो एक प्रकार के उद्योग के हैं। इसके अलावा हमारे यहाँ एल्युमिनियम, कैमिकल प्लांट्स, सीमेन्ट, क्रेशर व कोयला खदान जैसे अनेक उद्योग हैं जो हवा, पानी व मिट्टी को प्रदूषित कर रहे हैं। अर्थात् हम सोचने के लिए मजबूर होते जा रहे हैं कि क्या हमें ऐसा ही विकास चाहिए? या इसका भी कोई विकल्प है?

आइये सोचें हम क्या पहल कर सकते हैं?

1. बिजली से चलनेवाले घरेलू साधनों का उपयोग कम कर दें।
2. जहाँ बिजली की जरूरत न हो स्विच बन्द करें।
3. व्यक्तिगत वाहनों की जगह सार्वजनिक वाहनों का उपयोग करें।
4. यूज एण्ड थ्रो (समान का एक बार उपयोग करके फेंक देना) संस्कृति से दूर रहें, एक वस्तु को बार-बार प्रयोग में लायें।
5. प्लास्टिक जैसी न सड़नेवाली वस्तुओं का उपयोग न करें।
6. धरती में पानी पुनर्भरन किया जाये।
7. पानी के स्रोतों को प्रदूषणमुक्त रखा जाये।
8. वनीकरण हो, इससे दुबारा पनी संरक्षण हो सकता है। जहाँ पानी गिरता है— वहाँ उसका संरक्षण करना चाहिए।
9. पानी ऐसी निजी सम्पत्ति न बने, जो कि बेची या खरीदी जा सके। यह 'वस्तु' नहीं बनायी जाय।

खर्चीलापन घटाएँगे।
धरती का वैभव बढ़ायेंगे।

सिंगरौली क्षेत्र का विकास....?

1950 के दशक में रिहन्द नदी के ऊपर पिपरी में बाँध बनाकर गोविन्द वल्लभ पन्त सागर का निर्माण हुआ, जिसमें करीब 430 वर्ग किलोमीटर कृषि भूमि डूब गयी और बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ। रिहन्द बाँध से 300 मेगावॉट बिजली पैदा होनेवाली थी और नीचे ओबरा में 100 मेगावॉट विद्युत उत्पादन होनेवाला था। इस ऊर्जा की उपलब्धता को देखकर रेनुकूट में 1962 में हिण्डालको की स्थापना हुई। 3 वर्ष बाद कनोरिया से हिण्डालको को सोडा आयरन की सप्लाई होने लगी। 1971 में डाला में सीमेंट का कारखाना भी खुल गया और इस प्रकार सिंगरौली क्षेत्र में औद्योगिक विकास के पहले कदम बढ़ने लगे। इस बीच में पन्त सागर के पश्चिम में लगभग 1000 करोड़ टन कोयले का भण्डारण पाया गया और झिंगुरदाह में पहला ओपन कास्ट कोयला खदान 1963 में खोला गया। इसी कोयले के आधार पर विद्युत ताप गृह की स्थापना शुरू हुई तथा 1967 में रेनुसागर (337.5 मेगावॉट) और उसके बाद क्रम से ओबरा (1550 मेगावॉट),

	Commissioned (MW)	Daily Requirement or Coal (CEA) in '000 tonnes	Coal burnt per day (as per installed capacity (tonne)	Production on 17-11-15 (MU) (CEA)	Produced (1.4.2015-17.11.2015) (MU) (CEA)	Average MU Produced per day	Coal brunt per day (tonne)*
Anpara A+B+C	2130	28	38340	35.82	7728.47	33.46	25092.44
Anpara C TPS	1200	13	21600	27.04	5445.4	23.57	17679.87
Rihand TPS	3000	35	54000	62.72	12499.14	54.11	40581.62
Singrauli TPS	2000	34	36000	48.45	10235.72	44.31	33232.86
Obra TPS	1278	10	23004	10.78	2499.42	10.82	8115.00
Renusagar (Hindalco) TPS	742	N.A.	13356	N.A.	N.A.	18.14#	13608.00
Vindhyachal	4760	68	85680	87.09	19123.54	82.79	62089.42
Sasan	3960	N.A.	71280	94.94	19061.54	82.52	61888.12
Mahan	600	N.A.	10800	0	0	0.00	0.00
Mahan Aluminium	900	N.A.	16200	N.A.	N.A.	16.20#	12150.00
TOTAL	20570		370260	366.84	76593.23	365.92	274437.82

सिंगरौली (2000 मेगावॉट), अनपरा (630 मेगावॉट), विन्ध्याचल (1050 मेगावॉट) और रिहन्द (1000 मेगावॉट) विद्युत संयंत्रों ने विद्युत उत्पादन 1988 तक आरम्भ कर दिया था, इसके साथ-साथ कई छोटी औद्योगिक इकाइयों ने भी उत्पादन शुरू की। बड़ी-बड़ी कालोनियाँ बन गयीं, राख को डालने के लिए विशाल तालाब बने और हजारों परिवारों का विस्थापन हुआ।

1988 में जब NTPC अपने विद्युत ताप गृहों का विस्तार करने में लगा था और कुछ नये संयंत्र की योजना बन रही थी, इसके पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों के अध्ययन का काम फ्रांसीसी कम्पनी EDF/CDF को सौंपा गया। EDF/CDF का मानना था कि पहले चरण में विद्युत उत्पादन 6760 मेगावॉट से 10510 मेगावॉट तक बढ़ेगा और दूसरे चरण में 18510 मेगावॉट तक। विस्तार के लिए सिर्फ अतिरिक्त भूमि की ही नहीं बल्कि कोयले, पानी, मजदूर इत्यादि साधनों की भी जरूरत होगी और इस सबका असर हवा, पानी, जमीन पर पड़ेगा। EDF/CDF ने उस समय के वातावरण की गुणवत्ता को नापा और फिर अंदाज लगाया कि आगे चलकर कितना उत्पादन बढ़ेगा, कितना कोयला जलेगा, कितना पानी इस्तेमाल होगा, इत्यादि और इन सबके क्या प्रभाव होंगे। इसीके आधार पर उन्होंने 1990 में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में ऐलान किया है कि दूसरे चरण में भी पर्यावरण पर ''कोई खास' असर नहीं होगा, केवल आबादी बढ़ जायेगी और विस्थापन होगा—जिन समस्याओं के लिए व्यापक क्षेत्रीय विकास योजना से हल निकाला जा सकता है।

उस जमाने में कई और अध्ययन भी हुए जैसे कि 1992 में जबलपुर के GSI ने 1864 से उपलब्ध आँकड़ों का सर्वे करके बताया कि जमीन पर घातक बदलाव, बड़े पैमाने पर विस्थापन, कृषि भूमि पर जलाशय का फैलाव, रिहन्दनदी की शाखों में, जल स्रोतों में नकारात्मक परिवर्तन, जंगलों का विनाश, मिट्टी का कटाव और औद्योगिक क्षेत्र का भयानक विस्तार हुआ है। 1992 में ही राँची स्थित CMPDI के अध्ययन से पता चला कि 1975 से वन-भूमि 37% से 25%, और कृषि-भूमि 53% से 49% तक घट गयी थी, जबकि औद्योगिक और खदान क्षेत्र एवं बंजर-भूमि दोगुनी हो गयी थी। 1993 में अंग्रेज कम्पनी GHK/MRM की प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक विद्युत उत्पादन 20,000 मेगावॉट तक बढ़नेवाला था तथा इसके दुष्प्रभावों से बचने के लिए एकमात्र रास्ता था कि ग्रामीण अंचल में भी नियोजित ढंग से विकास हो। 1999 में NRSA हैदराबाद के शोध ने बताया कि घना जंगल 1982 में 13% से घटकर 1994 में 6% हो गया था। इन सबके अलावा भी कई और अध्ययन हुए, जैसे की रूड़की विश्वविद्यालय, IIT कानपुर, ITRC लखनऊ और CMRI धनबाद द्वारा तथा सबमें नकारात्मक पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों का बयान था। सभी संयंत्रों (NTPC, NCL अनपरा, डाला सीमेंट, हिण्डालको, कनोरिया) इत्यादि की वार्षिक रिपोर्ट प्रदूषण नियंत्रण मंडलों के पास जमा है और सूचना के अधिकार (RTI) कानून के तहत उपरोक्त सारी रिपोर्ट जनता को उपलब्ध हो सकती है।

वर्तमान में सिंगरौली क्षेत्र का विद्युत उत्पादन 20570 मेगावॉट से अधिक है। EDF/CDF के अनुसार दूसरे चरण में सिंगरौली क्षेत्र में 18510 मेगावॉट तक विद्युत उत्पादन, पर्यावरण पर 'कोई खास' असर न करते हुए, किया जा सकता था। इसके अलावा 7380-10560 मेगावॉट तक विद्युत उत्पादन के लिए ताप गृह बनने शुरू हो गये हैं और इसके अतिरिक्त और 4210 मेगावॉट बनाने की अनुमति ली जा रही है। कुल इस क्षेत्र में करीब 35000 मेगावॉट की बिजली का उत्पादन होगा।

सवाल यह है कि विभिन्न शोधों के अनुमानों के मुताबिक प्रदूषण बढ़ा है या नहीं? उपरोक्त रिपोर्टों और बनवासी सेवा आश्रम द्वारा 2002 से 2009 तक किये गये मापन विधियों से प्राप्त आँकड़ों से इस सवाल का जवाब दिया जा सकता है। पहला मुद्दा प्रदूषण के स्तर का है। 1988 में EDF/CDF के अनुसार कोयले के जलने से ही सलाना वातावरण में 680 टन क्रोमियम, 340 टन निकल, 270 टन लेड जैसे धातु और 1760 टन फ्लोराइड छोड़ा जा रहा था। अब इसका तीन गुना वातावरण में प्रवेश कर रहा होगा। 1988 में हिण्डालकों भी प्रति टन एल्युमिनियम, 3 किलो फ्लोरइड पैदा कर रहा था। लेकिन 1992 की CPCB की रिपोर्ट बताती है कि यह शायद बढ़कर 15 किलो हो गया था। 1988 में कनोरिया 420 किलो पारा पर्यावरण में प्रतिवर्ष छोड़ रहा था, लेकिन 1993 में GHK/MRM ने इसका करीब 80 गुना मापा है। उसी समय मछलियों में पारा और लिन्डेन और DDT कीटनाशकों की मात्रा सीमा से कहीं ज्यादा थी। EDF/CDF रिपोर्ट के अनुसार दूसरे चरण (18510 मेगावॉट) तक गोविंदपुर में SO_2 (जहरीला सल्फर डायऑक्साइड गैस जो कोयले के जलने से पैदा होता है) की मात्रा 40 मिलीग्राम प्रतिलीटर से अधिक नहीं होना चाहिए था लेकिन आश्रम के मापन ने सिद्ध कर दिया कि 2009 की स्थिति में SO_2 की मात्रा 50 और 100 के बीच पहुँच गयी है। NO_2 (एक और जहरीली गैस जो कोयले के जलने से आती है) और धूल के कण भी निर्धारित सीमा को पार कर गये हैं।

दूसरी बात है कि प्रदूषण कैसे फैल रहा है? EDF/CDF और प्रदूषण मंडलों का मानना है कि धुँआ चिमनी से सीधे बाहर निकलता है और फिर वहीं से नीचे की तरफ गिरने लगता है, यानी की सबसे अधिक प्रदूषण चिमनी के नजदीक संयंत्र के परिसर में होता है और दूरी के साथ घटकर 10 किलोमीटर के अन्दर प्रायः समाप्त हो जाता है। लेकिन पिछले 20 सालों के मापन से पता चल रहा है कि धुँआ चिमनी से ऊपर की तरफ बढ़ता है, जब तक कि उसका घनत्व वायु के बराबर न हो जाय और फिर वह हवा की दिशा में

बहते हुए धीरे-धीरे नीचे आता है, अर्थात् सबसे अधिक प्रदूषण चिमनी से 5 से 10 किलोमीटर की दूरी पर होता है। इस बात की पुष्टि आश्रम द्वारा किये गये मापन से तो हुआ ही है, साथ में यह भी देखा गया है कि फलदार वृक्षों पर कु-प्रभाव 25 किलोमीटर तक पाया जाता है। इसी प्रकार प्रदूषित पानी भी पन्त सागर या रिहन्द नदी पहुँच कर मानकों को पार कर रहा है। जैसे कि अब पारा और फ्लोराइड सभी नालों, तालाबों और जलस्रोतों में पाया जा रहा है और विशेष तौर पर डोंगियानाला, बलियानाला तथा ऐश पोंड के पानी में इनकी मात्रा मानकों से कई गुना अधिक है।

तीसरी बात यह है कि पर्यावरण के पतन से कितना नुकसान हो रहा है? EDF/CDF का कहना है कि दूसरे चरण के अन्त तक भी विस्थापन के अलावा और कोई समस्या नहीं है। राँची के XIDAS संस्था के 1998 के अध्ययन के अनुसार 6300 से अधिक विस्थापित परिवारों में से केवल 62% का पुनर्वास हुआ था जबकि 34% 'लापता' थे, जिनको मुआवजा मिला था उनमें से 86 प्रतिशत समझते थे कि जमीन की कीमत बहुत कम ऑकी गयी थी। पहले जहाँ 84 प्रतिशत लोग खेती करते थे, 57 प्रतिशत मजदूरी करने लगे थे और 24 प्रतिशत बेरोजगार थे। 20 प्रतिशत भूमिहीन बढ़कर 70 प्रतिशत हो गये थे। आम द्वारा पूर्वी क्षेत्र में 22 गाँव के सर्वेक्षण से पाया गया कि प्रतिवर्ष लाह उत्पादन में रुपया 43.7 लाख, आम रुपया 9.6 लाख, महुआ रुपया 1.9 लाख और अमरूद में रुपया 1.6 लाख की हानि हो रही है और इस हानि की मात्रा विभिन्न स्थानों पर प्रदूषण की मात्रा के अनुसार ही कम-ज्यादा है और अभी 2010 में किये गये बीचपुर के निकट छोटे से स्वास्थ्य परीक्षण में पाया गया कि अधिकतर लोगों के फेफड़े कमजोर हैं, मांसपेशियों में ताकत नहीं है और महिलाओं में गर्भपात आम बात है—जो सब हानिकारक प्रदूषण को इंगित करते हैं।

इन सभी बातों से चिन्हित होता है कि सिंगरौली क्षेत्र के पर्यावरण और समाज की अपेक्षा से अधिक बुरा हाल है। अभी ही यहाँ 20570 मेगावॉट बिजली का उत्पादन होता है। आगे चलकर 35000 मेगावॉट का उत्पादन होगा, जिसमें निजी कंपनियों का बड़ा हिस्सा होगा। जाहिर है कि इन सबके लिए विस्थापन बढ़ेगा, पुर्नवास और बेकार होगी, कोयला खोदाई और चलेगा और असीमित प्रदूषण बढ़ेगा। इसको रोकने के लिए जब तक प्रभावित जनता संगठित होकर आगे नहीं आयेगी, अपने अध्ययन और मापन खुद नहीं करेगी, तथ्यों के आधार पर अपनी आवाज नहीं उठायेगी और वैकल्पिक विकास की प्रस्तावना नहीं करेगी, तब तक विनाश का यह रथ चलता रहेगा औ प्रकृति को रौंदता जायेगा।

–बनवासी सेवा आश्रम, गोविन्दपुर

सम्पूर्ण क्रांति की जय बोली,
चल बड़ी जवानों की टोली।

कोई भी फूल न मुरझाये,
हर डाली पर कोयल गाये,
फुलवारी सुरभित हो जाय,
नवजीवन ले वसंत आये।

यह स्वप्न संजोये हमजोली,
निकली मरदों की टोली।
सम्पूर्ण क्रांति की जय बोली,
चल पड़ी जवानों की टोली।

होली के स्वर में झूम उठी,
मजदूर किसानों की टोली,
सम्पूर्ण क्रांति की जय बोली,
चल पड़ी जवानों की टोली।

है हवन कुंड जागृत रखना,
है जवन यज्ञ सफल करना,
है आहुतियों का रस चखना,
है मन्त्र मृत्युंजय का जपना।

क्यों देवी देव मनावें हम,
अपना पौरुष दिखलावें हम,
हिल-मिल कर कदम बढ़ावें हम,
जीवन की जयोति जगावें हम,

भर-भर प्राणों की झोली,
यह है यजमानों की टोली।
सम्पूर्ण क्रांति की जय बोली,
चल पड़ी जवानों की टोली।

आई दीवानों की टोली,
लेकर अक्षत-चन्दन रोली।
सम्पूर्ण क्रांति की जय बोली,
चल पड़ी जवानों की टोली।

फैले समाज में सदविचार,
सदभाव, समन्वय, सदाचार,
हुंकार उठे सब एक बार,
रह जाय नहीं कोई विकार।

निज हाथ हथेली पर लेकर,
औ कफन बाँध सर के ऊपर
अरमान, प्राण होन्योदावर,
पाकर कुर्बानी का अवसर।

पहुँचे बलिदानों की टोली,
लेकर आजादी की डोली।
सम्पूर्ण क्रांति की जय बोली
चल पड़ी जवानों की टोली।

—रामप्रवेश शास्त्री

बनारस के एक्टिविस्ट अमन से प्रो. (डॉ.) योगेन्द्र यादव की बेबाक बातचीत

प्रो. योगेन्द्र : अमन जी! आपको इस प्रकार समाजसेवा की प्रेरणा कहाँ से मिली?

अमन : बचपन में मैं बहुत शरारती था। मेरा घर स्टेशन के पास था, इसलिए जब कोई यात्री रास्ता भटक जाता था, तो मैं उसे उसका पता पूछकर उसके घर तक पहुँचाने का काम करता था।

प्रो. योगेन्द्र : क्या आप आर्थिक रूप से सक्षम हैं?

अमन : जी नहीं! मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। अब तो पिताजी भी इस दुनिया में नहीं रहे। घर का बड़ा लड़का होने के नाते सारी जिम्मेदारी मुझे ही निभानी पड़ती है। छोटा भाई पढ़ रहा है, उसकी भी जिम्मेदारी मेरे ऊपर है। माँ की भी जिम्मेदारी है।

प्रो. योगेन्द्र : फिर आप इन जिम्मेदारियों को कैसे निभाते हैं?

अमन : इस शहर के कुछ लोग हजार-पाँच सौ की मदद कर देते हैं, उसी से काम चल रहा है। बहुत साधारण रूप से जीते हैं। साधारण खाना खाते हैं, सायकिल से चलते हैं। इसलिए ज्यादा खर्च भी नहीं होता है। बाबा भोलेनाथ की कृपा से अभी तक ऐसी स्थिति नहीं आयी कि दाल-रोटी के लाले पड़े हों।

प्रो. योगेन्द्र : बचपन की मदद करने की प्रवृत्ति आज के समाजसेवा के रूप में कैसे परिवर्तित हुई, थोड़ा विस्तार से बताने की कृपा करें?

अमन : 2007 की बता है। बनारस की कचहरी में विस्फोट हुआ था। उस समय मैं पढ़ता था, स्कूल से घर लौटते समय एक दूकान पर सहारा न्यूज पर समाचार देखा कि जो लोग घायल हो गये हैं, उन्हें कबीरचौरा हॉस्पिटल ले जाया जा रहा है। मैंने एक सैलून में अपना स्कूल बैग फेंक और कबीरचौरा हॉस्पिटल चला गया। वहाँ पर जाकर मैंने मरीजों का घाव साफ करने लगा, पट्टी बाँधने लगा। इस तरह से बड़े पैमाने पर मेरा सेवा कार्य इस तरह शुरू हुआ।

प्रो. योगेन्द्र : आपके पिताजी या घर वालों ने इसका विरोध नहीं किया?

अमन : कबीरचौरा हॉस्पिटल में जब मैं लोगों का घाव साफ कर रहा था, उन्हें पट्टी बाँध रहा था, तभी मुझे जाननेवाले किसी व्यक्ति ने मुझे देख लिया। उसने जाकर मेरे पिताजी को सारा वाकया बता दिया। जब मैं घर पहुँचा, तो मेरे पिताजी ने मुझे रस्सी से बाँध कर मेरी खूब पिटाई की। और कहा कि यह सब फालतू काम है, इसमें टाइम बर्बाद मत करो, अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो।

प्रो. योगेन्द्र : तो क्या आपने कुछ दिन के लिए यह सेवा कार्य बंद कर दिया?

अमन : जी नहीं। दूसरे दिन मैं फिर पहुँचा और घायल लोगों के घाव साफ करने लगा, पट्टी बाँधने लगा।

प्रो. योगेन्द्र : उस दिन आप स्कूल नहीं गये क्या?

अमन : जी नहीं। इस विस्फोट के कारण स्कूल कुछ दिनों के लिए बंद कर दिये गये थे।

प्रो. योगेन्द्र : क्या इसकी भी खबर आपके पिताजी को लग गयी?

अमन : जी हाँ। दूसरे दिन भी मुझे किसी ने घायलों की सेवा करते देख लिया, उसने फिर मेरे पिताजी से जाकर मेरी शिकायत कर दी। उस दिन पिताजी ने मुझे दंड देने के लिए जंजीर खरीदी और बहन को पौना गरम करने को कहा। जब मैं घर पहुँचा तो मुझे जंजीर से बाँध कर मुझे खूब मारा और गरम पौने से मुझे जला दिया। मैं पीड़ा से तड़पता रहा और कई बार बेहोश भी हो गया।

प्रो. योगेन्द्र : क्या आपके पिताजी इतने निर्दयी थे?

अमन : जी नहीं। मैं आज भी पढ़ रहा हूँ, काशी विद्यापीठ में बी.ए. द्वितीय वर्ष का छात्र हूँ।

प्रो. योगेन्द्र : कचहरी के दंगे के बाद आपके जीवन में क्या मोड़ आया?

अमन : 2008 में अणाजी का आन्दोलन बनारस में शुरू हुआ। उसमें भी मैं भाग लेता था। इस दौरान समाज के कुछ अच्छे लोगों से मेरी मुलाकात हुई। मेरी उनसे बात भी होने लगी। उन लोगों ने मेरे काम की सराहना की और मेरा उत्साह बढ़ाया।

प्रो. योगेन्द्र : फिर किसी आन्दोलन में आपने भाग लिया?

अमन : जी हाँ। इसी दौरान स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द के नेतृत्व में गंगा आन्दोलन शुरू हुआ। उस समय मैं कबीरचौर स्थित सरकारी स्कूल में पढ़ रहा था। एक दिन मैं स्कूल से लौट रहा था तो देखा कि कुछ संत अनशन कर रहे हैं। मैं रोज जाने लगा, वाहँ बैठने लगा। एक दिन स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द ने मुझे बुलाया और पूछा कि बेटे तुम रोज यहाँ आते हो। मैंने उनसे कहा कि मैं आपके साथ इस आन्दोलन में भाग लेना चाहता हूँ। उस दौरान मैं राजघाट से केदार घाट तक नंगे पैर जाता। स्वामीजी ने जब मुझे इस तरह से देखा, तो मेरा बहुत ध्यान करने लगे, मुझे प्यार करने लगे। उनके साथ मैंने भी एक दिन का निराहार अनशन किया।

प्रो. योगेन्द्र : अमन जी! जहाँ तक मुझे पता है कि स्वामीजी ने गंगा आन्दोलन को देशव्यापी बनाने के लिए देश की राजधानी दिल्ली में भी अनशन-प्रदर्शन किया। क्या आप आन्दोलन में भाग लेने के लिए वहाँ भी गये?

अमन : जी हाँ! मैं स्वामीजी के साथ जंतर-मंतर पर होनेवाले आन्दोलन एवं अनशन में भाग लिया। इसके बाद जो क्रमिक अनशन स्वामीजी ने राजघाट पर किया, उसमें भी भाग लिया। महात्मा गांधी की समाधि पर भी गये।

प्रो. योगेन्द्र : महात्मा गांधी की समाधि पर आपको कैसा अनुभव हुआ?

अमन : गजब का अनुभव। इसके बाद तो अन्तिम व्यक्ति की सेवाकार्य जो मैं कर रहा था, उसे करने में मुझे आनन्द भी आने लगा।

प्रो. योगेन्द्र : अमन जी! आपको यह मेडिकल की समझ कहाँ से आयी?

अमन : कबीरचौरा के बगल में स्वामी विवेकानंद स्कूल है। बाद में मैं उसमें पढ़ने लगा। जिनका स्कूल है, उनका ही एक मेडिकल स्टोर भी है। घर की माली हालत ठीक न होने के कारण और सेवा-कार्य के लिए पैसे की जरूरत को पूरा करने के लिए मैं स्कूल के पहले और बाद में उनके ही मेडिकल स्टोर पर काम करने लगा। जब भी कबीरचौरा पर कोई लावारिस घायल अवस्था या बीमार दिखे, तो मैं उसकी सेवा में लग जाता था।

प्रो. योगेन्द्र : सेवा के अलावा भी कोई शौक?

अमन : जी हाँ, मेरा एक शौक और है। मंचीय नाटकों में किरदार निभाना।

प्रो. योगेन्द्र : यह शौक आपको कैसे लगा?

अमन : बात उन दिनों की है, जब मैं स्वामी विवेकानंद स्कूल में पढ़ता था। उसी स्कूल में डॉ. व्योमकेश शुक्लजी पढ़ाते हैं। वे एक अच्छे साहित्यकार भी हैं। स्कूल के किसी कार्यक्रम में मैं भाग नहीं लेता था। लेकिन वे मेरे कार्यों से परिचित थे। उन्हें मालूम था कि मेरे अन्दर एक ऐसा दिल है, जो किसी लावारिस घायल को देखकर सबकुछ भूल जाता है। उन्होंने मुझे डाँट कर स्कूल में होनेवाले नाटकों में रोल देना शुरू किया। मुझे नाटक की बारीकियाँ सिखाने लगे।

प्रो. योगेन्द्र : आपने किन-किन नाटकों में भाग लिया?

अमन : पिछले तीन सालों में गोदान, कामायनी, अंगुलिमाल, आषाढ़ का एक दिन और बाल भगवान् नाटकों में भाग लिया। दर्शकों के अलावा मेरे गुरु डॉ. व्योमकेश शुक्ल ने भी मुझे सराहा।

प्रो. योगेन्द्र : नाटकों की आपके जीवन में क्या भूमिका है?

अमन : इन नाटकों ने मुझे समाज में कैसे जीना है, यह सिखा दिया। अस्सी मोहल्ला नाटक का रिहर्सल हो रहा था। इस नाटक का रिहर्सल करते-करते मैंने समाज में मेरी भूमिका क्या होगी, कैसे होगी, मुझे अपने मिशन पर कैसे काम करना है, मुझे अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों को कैसे निभाना है, यह सब सिखा दिया।

प्रो. योगेन्द्र : अमन जी! अभी भी मेरा सवाल अनुत्तरित है, इसकी शुरुआत कैसे हुई? यह बताने की कृपा करें?

अमन : जब मैं बनारस आया तो कबीरचौरा की गलियों में जाना शुरू किया। वहाँ दो कटेगरी के लोग रहते हैं। एक तरफ लोग सम्पन्न हैं, दूसरी ओर लोग बहुत गरीब एवं पिछड़े हुए हैं। एक दिन मैं एक गली से गुजर रहा था, तभी मेरी नजर गली में पड़े एक लावारिस पर टिक गयी। मैंने देखा कि वह अपने भाई से खाना माँग रहा है, लेकिन वह उसे खाना भी नहीं खिला रहा है। मैं घर लौटा, खाना बनवाया। ले जाकर उसे खिलाया। तो उसका भाई बहुत नाराज हुआ और बोला इसको जो रोग हुआ है, वह आपको भी हो जायेगा।

प्रो. योगेन्द्र : मैंने सुना है कि आप अपना जन्मदिन इन लावारिस लोगों के बीच में मनाते हैं, क्या यह सही है?

अमन : जी हाँ! यह बिलकुल सही है। मैं अपने हर जन्मदिन पर इन गलियों में घूता हूँ और जो भी लावारिस मुझे मिलता है, उसे मैं अच्छा भोजन कराता हूँ, उसे पहनने के लिए कपड़े देता हूँ।

प्रो. योगेन्द्र : अपने जन्मदिन की कोई घटना बताने की कृपा करें?

अमन : जबसे मैंने इस तरह अपना जन्मदिन मनाना शुरू किया, उसके दूसरे साल की बात है। मैं इन गलियों में घूम रहा था। उस समय इन गलियों में न तो लाइट थी, न किसी घर में पंखा लगा हुआ था। मोटे-मोटे चूहे वहाँ बेखौफ दौड़ रहे थे। तभी मुझे सूचना मिली कि उस पर एक महिला बेहोशी की हालत में पड़ी हुई है। मैंने एक पत्रकार महोदय को फोन करके बुलाया। उस महिला ने मोक्ष प्राप्त करने के लिए जहर खा लिया था। मुझे उस पार जाना मना है। ऐसी मन्नत है। मैं नाव चलानेवालों के पास गया। उनसे मिन्नतें कीं। तब वे उसे ले आये। फिर मैं उसे एक टेम्पो में लादकर कबीरचौरा ले आया। शिवरात्रि का दिन था। मैंने उसे हास्पिटल में भर्ती करवाया। दो तीन दिन बाद उस महिला को होश आया। जब मैं उसे लेकर आया था, उस समय उसने लाखों के गहने पहन रखे थे। मैंने उन गहनों को कुछ लोगों की उपस्थिति में उतरवा कर रखवा दिया था। दक्षिण भारतीय होने के नाते हम उसकी भाषा नहीं समझ पाते थे। फिर मैंने धर्मशालाओं-गेस्ट हाउस में तलाश किया। उसके साथ आये हुए लोग मिल गये। जब वह जाने लगी, तो अपना पूरा गहना मुझे दे रही थी। पर मैंने नहीं लिया। फिर भी उसने जबरदस्ती मुझे पचास रुपये का एक नोट दिया। मैंने उससे कहा कि जहाँ आप रहती हैं, वहाँ के किसी लावारिस को कपड़े दिलवा दीजियेगा। बस यही मेरी इच्छा है। मैं आपके गहने को लेकर क्या करूँगा। उसने मुझे अपने गले लगा लिया।

प्रो. योगेन्द्र : आपने इन गलियों में लाईट का प्रबंध कैसे करवाया?

अमन : जब मैं अपना जन्मदिन बनारस के लावारिसों के साथ मना रहा था तो मैंने इण्डिया न्यूज के पत्रकार डॉ. संतोष ओझा को फोन किया। वे रात को नौ बजे आये। उन्होंने हमसे पूछा— क्या करते हो? फिर हमने अपनी कहानी सिलसिलेवार उन्हें बतायी। फिर उन्होंने वहाँ के सी.एम.एस. से कहकर वहाँ लाइट लगवाये। इन गलियों में यह पहला परिवर्तन हुआ।

प्रो. योगेन्द्र : इस जन्मदिन की कोई यादगार घटना।

अमन : इसी दिन इस हास्पिटल में एक रूस का व्यक्ति आया। उसने हास्पिटल परिसर में एक मंदिर बनवा दिया। उसके इस काम में मैंने भी उसकी मदद की। पर मुझे बाद में पता चला कि इसका दिमाग डिस्टर्ब हो गया है। फिर मैंने उसे मेंटल हास्पिटल में दिखाया। इस कार्य में पुलिस का सहयोग लिया।

प्रो. योगेन्द्र : स्वास्थ्य के क्षेत्र में विशेषकर लावारिसों के लिए आप इतना काम कर रहे हैं, क्या आपकी इस प्रदेश के स्वास्थ्यमंत्री से बात हुई?

अमन : जी हाँ।

प्रो. योगेन्द्र : क्या बात हुई?

अमन : इस रूस के व्यक्ति के मेंटल इलाज के दौरान मेरी तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री अहमद हसन से बात हुई। अहमद हसन जिस दिन आनेवाले थे, मैं उनसे मिलने के लिए

पहुँच गया। लावारिसों की सेवा के लिए एक ज्ञापन उन्हें सौपा। कबीर चौरा हास्पिटल में मरीजों के साथ जो दुर्व्यवहार हो रहा था, उसकी ओर उनका ध्यान उसकी ओर आकर्षित किया। आये दिन जो लावारिसों की मौत होती है, उस पर अपनी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि तुम लावारिसों की चिंता मत करो। अपने मोहल्ले की चिंता करो। उनकी चिंता 108 करेगी। तुमने अपने मोहल्ले के कितने लोगों का इलाज करवाया? मैंने उनसे कहा : मैं आपसे मिलने मोहल्लेवालों के लिए नहीं आया हूँ। मैं लावारिसों के लिए आया हूँ। जहाँ नर्सें उन्हें मारती हैं, उनकी उपेक्षा करती हैं, उनका इलाज नहीं करती हैं। फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या तुम्हें सियासत से लगाव है? वोट देते हो क्या? मैंने कहा कि मैं भारत का नागरिक हूँ इसलिए वोट देना मेरा नैतिक अधिकार है। वह मैं देता हूँ। फिर उन्होंने कहा कि चलो मैं तुम्हारी शिकायत की जाँच करवाता हूँ।

प्रो. योगेन्द्र : क्या उन्होंने जाँच करवाई?

अमन : जी नहीं। उन्होंने आज तक जाँच नहीं करवाई।

प्रो. योगेन्द्र : फिर आपने क्या किया?

अमन : जब मैंने देखा कि कुछ नहीं हो रहा है, तब मैं तत्कालीन डीएम प्रांजल यादव से मिला। उनको भी इस सम्बन्ध में ज्ञापन दिया, उनके ही आदेश से कुछ सुधार हुआ।

प्रो. योगेन्द्र : फिर क्या हुआ?

अमन : इसी दौरान मुझे ई.टीवी के पत्रकार शरद दीक्षित जी मिले। उन्होंने मुझसे कहा कि जो काम तुम यहाँ करते हो, वह रोड पर भी करो। रोड पर तमाम लोग घायल हो जाते हैं, जिनको कोई हास्पिटल तक पहुँचाने की जहमत नहीं उठाता। इससे तुम्हारा सेवा कार्य-क्षेत्र व्यापक बनेगा। बैग में मलहम-पट्टी लेकर चला करो।

प्रो. योगेन्द्र : क्या अपने उनकी इस नसीहत को माना?

अमन : जी हाँ, तुरंत माना। मैंने अपनी जेब में हाथ डाला। देखा बीस रुपये पड़े हैं। मैं उसी विवेकानन्द मेडिकल स्टोर पर आया। उनसे कहा कि मेरे पास बीस रुपये पड़े हैं, मुझे यह काम करना है, वे मेरी सेवा-भावना से पहले से ही परिचित थे। उन्होंने मुझे एक छोटा डिटाल, बैंडेज, काटन लगभग सौ रुपये का सामान दे दिया।

प्रो. योगेन्द्र : जब आप रोड पर उतर गये, तो अपनी सेवा का पहला वाकया तो बता दीजिये।

अमन : एक दिन मैं अपनी साइकिल से कोनिया जा रहा था। रास्ते में देखा कि जो लोग कचरा बिनते हैं, किसी बात पर आपस में लड़कर एक दूसरे का सिर फोड़ दिये हैं। फिर मैंने देखा कि तीन-चार पुलिसवाले भी उसकी पिटाई कर रहे हैं। वे उन घायलों को कबीरचौरा हास्पिटल ले जाने के लिए जद्दोजहद कर रहे थे। पर वे नहीं जा रहे थे। उनकी हालत देखकर मेरा दिल द्रवित हो गया। मैंने हिम्मत जुटाकर पुलिसवाले से कहा कि यदि आपकी आज्ञा हो, तो मैं इनकी मरहम पट्टी कर दूँ। उन्होंने मुझसे कई सवाल किये, जब वे मेरे उत्तरों से संतुष्ट हो गये, तब जाकर अनुमति दी। मैंने उनकी मलहम पट्टी की। जब मैं जाने लगा तो एक पुलिसवाले ने अपनी जेब से सौ रुपया निकाल कर देने लगा। मैंने उनसे पैसा नहीं लिया। इसकी चर्चा उन्होंने अपने थानेदार साहब से की। उन्होंने मुझे बुलाया। जब मेरे बारे में सारी जानकारी कर ली और बाद में उसकी तहकीकात भी कर ली, तब मुझसे कहा कि बेटा जब कभी कोई जरूरत हो, कोई परेशानी हो, मुझसे कहना जरूर। मैं अपनी हैसियत के अनुसार तुम्हारी मदद करूँगा।

प्रो. योगेन्द्र : अपने जीवन का कोई ऐसा अनुभव सुनाइये, जो आप सुनाना चाहते हैं?

अमन : मेरे एक मित्र बंटी अग्रहरि ने एक दिन मुझे फोन किया कि लोहटिया में कूड़े के ढेर के पास एक आदमी पड़ा है, जिसके घाव बुरी तरह सड़ गये हैं, उसके घाव में कीड़े पड़ गये हैं। रोड पर काम करने की प्रेरणा यहाँ से मुझे मिली। मैंने बंटी अग्रहरि से कहा कि मैं आ रहा हूँ। जब मैं पहुँचा तो देखा कि बहुत तेज बदबू आ रही है। मुझे उल्टी होने लगी। मेरे पास दवा के रूप में हाइड्रोजन, बीटाडीन, काटन, डिटाल, बैंडेज, ग्लूकोज और पानी था। वह व्यक्ति बार-बार पानी माँग रहा था। मैंने उसकी सफाई की। उसे कबीरचौरा हास्पिटल में भर्ती करवाया। वह व्यक्ति दो हफ्ते तक जीवित रहा। इसके बाद वह मर गया।

प्रो. योगेन्द्र : इस काम के बाद क्या आपकी प्रतिष्ठा बढ़ी?

अमन : जी हाँ! दरअसल बंटी अग्रहरि ने इसे सोशल मीडिया पर डाल दिया। उस समय तक मैं नहीं जानता था कि फेसबुक या सोशल मीडिया क्या बला है? मुझसे जब मेरे कुछ जानने वालों ने पूछा कि क्या तुम इस तरह का काम करते हो? मैंने उनसे कहा कि हाँ। पर आपको कैसे पता? तब उन्होंने बताया कि फेसबुक पर देखा था। तब से मैं भी फेसबुक पर डालने लगा। धीरे-धीरे मुझसे कुछ लोग और जुड़े। एक-दो लोग।

प्रो. योगेन्द्र : इसके बाद की कोई घटना, जिसने आपके सामने चैलेन्ज उपस्थित कर दिया हो?

अमन : जी एक घटना है। एक दादी की उम्र की बुढ़िया जो लावारिस घूम रही थी, बहुत बीमार थी। उनके शरीर में जगह-जगह जख्म हो गये थे। मैंने उनकी खुद भी सेवा की और कबीरचौरा हास्पिटल में उन्हें भर्ती भी करवाया। एक दिन उनकी मृत्यु हो गयी। मरने के बाद उसे लावारिस घोषित कर पुलिस उनका पोस्टमार्टम करने की तैयारी कर रही थी। इन छः महीनों में मैंने उस महिला द्वारा दी गयी जानकारी के आधार पर उसके घरवालों की तलाश शुरू की। उनका एक लड़का मिला। उसने कहा कि उसकी माँ एक साल पहले मर गयी है। पास-पड़ोस के लोगों से मैंने उनके दो और बेटों के बारे में जानकारियाँ इकट्ठी कीं। उनसे भी मिला, उन्होंने भी दादी को पहचानने से इन्कार कर दिया। उसी दौरान उस दादी का एक पोता आ गया, जो मेरा भी परिचित था। जब मैंने उससे कहा कि तुम मेरी मदद करो, तो उसने अपनी मम्मी को फोन किया। उसकी मम्मी ने कहा कि फोन अपने पापा को दो। उसने फोन पर कहा कि वह बुढ़िया इस घर में नहीं आना चाहिए। बड़ी मान-मनौअल के बाद रात 11 बजे उसका दाह-संस्कार उसके बेटे करने को तैयार हुए। इस घटना से कई समाजसेवी साथी मुझे मिले, जो आज भी मेरे साथ काम करते हैं किन्तु इसमें से एक साथी ने अचानक एक एन.जी.ओ. बना ली और मुझे छोड़कर चला गया।

प्रो. योगेन्द्र : क्या आप एनजीओ में विश्वास नहीं करते?

अमन : जिसे सेवा करनी है, उसे एनजीओ की क्या जरूरत है। एनजीओ तो पैसा कमाने की मशीन बन गयी है। सरकारी धन को ऐंठने का लोगों ने तरीका निकाल लिया है। बिना काम किये ही धन-संग्रह कर रहे हैं। महँगी से महँगी गाड़ियों में सफर करते हैं। मुझे तो सेवा करनी है, मैं जीवन भर बिना एनजीओ की सेवा करता रहूँगा।

प्रो. योगेन्द्र : इस बारे में आपने राजनेताओं की मदद नहीं ली?

अमन : इसके लिए मैंने सभी दलों के नेताओं से गुजारिश की। पर एक बार जो नेता यहाँ आता, इतनी बदबू आती थी कि एक मिनट भी यहाँ नहीं ठहरता था, लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी। इसका परिणाम भी निकला। लोग मेरी मदद करने लगे। आज भी किसी नेता के पास जाता हूँ तो वह अपनी हैसियत के मुताबिक अधिकारियों को फोन तो जरूर कर देता है।

प्रो. योगेन्द्र : इस काम के लिए आप लोगों को कैसे प्रेरित करते हैं?

अमन : मैं लोगों से कहता हूँ कि आप भी मेरी तरह अपना एवं अपने बच्चों का जन्मदिन इन लावारिसों के साथ मनाइये, उन्हें पहनने के लिए कुछ कपड़े दीजिये। इंसानियत के रिश्तों को आगे बढ़ाइये। धीरे-धीरे कुछ लोग आने लगे हैं।

प्रो. योगेन्द्र : आपके जीवन का सूत्र वाक्य क्या है?

अमन : एकला चलो रे... गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर की ये पंक्तियाँ मेरे होठों पर हमेशा खेलती रहती हैं। इससे मुझे आत्मबल मिलता है। इन्हीं को गुनगुनाते हुए मैं लोगों से माँगता हूँ कि आप मुझे रूई दिला दीजिये, वीटाडीन दिलवा दीजिये, डेटाल दिलवा दीजिये, लोग दिलवा देते हैं।

प्रो. योगेन्द्र : क्या हास्पिटलों में लापरवाही नहीं होती है?

अमन : होती है। कई कर्मचारी इस तरह के लोगों को छूना भी पसंद नहीं करते हैं। ऐसे समय में मैं डी.एम. से मिलता हूँ, फोन करवाता हूँ, फिर लोग सक्रिय हो जाते हैं। इस कारण कई कर्मचारी मुझसे बेहद नफरत करते हैं, फिर भी मैं उनकी तरफ ध्यान नहीं देता हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि ऐसे लोगों की सेवा करना जिगर वालों का काम है।

प्रो. योगेन्द्र : क्या पुलिसवाले आपका सहयोग करते हैं?

अमन : पुलिस की प्रताड़ना तो झेलनी पड़ती है। वे जिरह करते हैं? यह काम क्यों करते हो? पर जब वे चले जाते हैं, तो मैं अपने सेवा-कार्य में लग जाता हूँ, उनका प्राथमिक उपचार कर देता हूँ, फिर उन्हें किसी टेम्पो में लाद कर भर्ती करवा देता हूँ। टेम्पोवाले मेरे और लावारिस के दर्द को समझते हैं। न तो मेरे पास उनको देने का पैसा होता है, न ही वे माँगते हैं। यदि उनके घर का कोई आ जाता है और सम्पन्न होते हैं तो मैं उन्हें किराया दिलवा देता हूँ।

प्रो. योगेन्द्र : पिछले सात सालों से सेवा करते हुए आपने कुछ निर्धारित किया कि आपको क्या करना है?

अमन : मैंने पिछले तीन सालों में बहुत कुछ सीखा। तीन बिन्दुओं पर काम करने का मन बनाया है—(1) जहरखुरानी या अन्य किसी लापरवाही के कारण घायल लोगों को जीआरपी वाले सरकारी अस्पतालों में फेंक कर चले जाते हैं। उनकी देख-रेख करनेवाला कोई नहीं होता है। मैं चाहता हूँ कि रेलवे उनकी जिम्मेदारी ले, उनके परिजनों की खोज करे और उनकी दवा की व्यवस्था करवाये। (2) दूसरे विक्षिप्त लोग हैं। सड़कों पर नंग-धड़ंग घूमा करते हैं, मेरी इच्छा है ऐसे लोगों को शहर के मानसिक चिकित्सालयों में भर्ती करवाया जाये। यदि किसी चिकित्सक को यह मालूम हो जाय, तो वे उसे मानसिक चिकित्सालय में रेफर अवश्य कर दे। (3) तीसरा जले लोगों के उपचार की व्यवस्था करवानी है। यहाँ के हास्पिटल में स्टाफ नर्स की बहुत कमी है। 55बेड पर एक नर्स है। यहाँ जले लोग आते हैं। कोई 80% कोई 60% जला आता है, एक ही नर्स सभी को नहीं संभाल सकती है। इसके लिए नियमित रूप से कमश्निर से मिलकर व्यवस्था करवानी है। यहाँ स्वीपर पट्टी करता है। वार्ड बॉय कहता है कि यह मेरा काम नहीं है।

प्रो. योगेन्द्र : क्या आपने इसकी शिकायत हास्पिटल के उच्च अधिकारियों से नहीं की?

अमन : इस सम्बन्ध में मैंने जब कबीरचौरा के सीएमएस से बात की तो यदि आप जैसे लोग इस काम में आ जायेंगे तो हम लोग केवल 20 प्रतिशत काम करेंगे। आप क्या समझते हैं कि आप मुझसे जबरदस्ती काम करवा लेंगे, तो यह आपकी बड़ी भूल है।

प्रो. योगेन्द्र : फिर आपने क्या किया?

अमन : मैं हार माननेवाला थोड़े ही हूँ। मैं सपा के जिलाध्यक्ष के पास गया। मैंने उनसे कहा कि आपकी सरकार है और आपके अधिकारी इस तरह की भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं। उन्होंने इसकी जानकारी डीएम को दी। मुझे उनके पास मिलने को भेजा। मैंने उनसे मिलकर पूरी बात बतायी। उन्होंने सीएमएस को डाँटा और चेतावनी दी कि इस तरह की घटना दुबारा नहीं होनी चाहिए। नहीं तो आपके खिलाफ वैधानिक कार्यवाई की जायेगी।

प्रो. योगेन्द्र : आपके जीवन के लक्ष्य क्या हैं?

अमन : मैं भोले बाबा से मिन्नत करता हूँ कि वह मुझे इस सेवा के काम में लगाये रखें। लोगों से भीख माँग कर मैं एक हॉस्पिटल बनवाना चाहता हूँ, जहाँ पर इस जिले के लावारिस लोगों का बेहतर इलाज किया जा सके। पं. मदन मोहन मालवीय यदि इतना बड़ा विश्वविद्यालय खड़ा कर सकते हैं तो मैं एक हॉस्पिटल क्यों नहीं खड़ा कर सकता हूँ। इसके लिए जल्दी ही मैं प्रयास करना शुरू कर दूँगा।

प्रो. योगेन्द्र : क्या आपने इसके बारे में प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं इस शहर के सांसद एवं देश के प्रधानमंत्री से इस सम्बन्ध में पत्र लिखा? जहाँ तक मेरी जानकारी है, दोनों जनप्रतिनिधियों में देश के लिए कुछ करने का जज्बा है।

अमन : अभी तक तो नहीं। दरअसल मैंने इस स्तर तक सोचा नहीं। आप जैसे भाइयों का सहयोग रहा, तो मैं देश के प्रधानमंत्री एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखूँगा।

प्रो. योगेन्द्र : अमनजी आपको शुभकामनायें एवं हमसे बातचीत करने के लिए धन्यवाद! ❑

अलसी के औषधीय गुण

❑ डॉ. योगेन्द्र यादव

सम्पूर्ण भारतवर्ष में पायी जानेवाली यह तिलहन वर्ग की एक फसल है। आज से बीस-तीस साल पहले इसे हर किसान थोड़ी-बहुत मात्रा में बोता था। लेकिन इधर देखने में आया है कि कैश क्राप के चक्कर में एवं इसके औषधीय गुणों की अनभिज्ञता के कारण छोटे जोत के किसान इसकी बुवाई नहीं कर रहे हैं। वैसे यह भी एक कैश क्राप ही है, जिसका उपयोग तेल एवं रेशे के रूप में उद्योगों में किया जाता है। देश के विभिन्न भागों में इसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। जैसे गुजराती में अडली, मराठी में जवास, बिहार में तीली, बंगाल में मशीना, तीशी, कन्नड़ में अगसी, मलयालम में चेरुचेना, तमिल में सिडिराई आदि।

यह एक आयुर्वेदिक औषधी है, इसका वर्णन चरक संहिता में भी मिलता है। आयुर्वेद के अनुसार अलसी रस में मधुर, गुण में गुरु, स्निग्ध, पिच्छिल, वीर्य में उष्ण, विपाक में कर, दोष कर्म में स्निग्ध, उष्ण होने के कारण वातशामक कफ्फ-पित्त वर्धक होती है। इसमें ओमेगा-3 और वास अम्ल पाया जाता है। अब मैं यह अलसी किन रोगों में फायदेमंद है, इसका वर्णन कर रहा हूँ—

हाई एवं लो ब्लड प्रेशर में लाभदायक : आजकल हर दो व्यक्ति में एक व्यक्ति हाई ब्लड प्रेशर या लो ब्लड प्रेशर से पीड़ित है। इसके कारण उसे नाना का प्रकार की व्याधियों का सामना करना पड़ता है। असली हमारे रक्त दबाव को नियंत्रित करती है। यह हमारे रक्त में अच्छे कोलेस्ट्राल की मात्रा को बढ़ाती है। धमनियों में खून के थक्के बनने से रोकती है और यदि थक्के बने हों तो उन्हें साफ भी करती है।

मोटापा दूर करने में सहायक– आजकल स्लिम होना हर युवा-युवती चाहता है। किन्तु फास्ट फूड की संस्कृति होने के कारण मोटापा होना एक बात हो गयी है। ऐसे व्यक्ति यदि अलसी का प्रयोग करें तो उन्हें बहुत फायदा होगा। अलसी में फाइबर होता है, इसके कारण इसके खाने से पेट लम्बे समय तक भरा रहता है। भूख नहीं लगती। प्यास खूब लगती है। इस तरह वजन कम करता है। अतिरिक्त वसा का उपयोग परिश्रम या अन्य कार्य करने में हो जाता है।

कब्ज में लाभदायक–आमतौर पर जिन्हें कब्ज होता है, वे इसबगोल की भूसी का सेवन करते हैं, जबकि अलसी में इसबगोल से भी ज्यादा एवं घुलनशील एवं अघुलनशील रेशे पाये जाते हैं, जिससे पेट की सफाई अच्छी तरह से हो जाती है। इसके सेवन से कब्ज रोगियों को पहले ही दिन से राहत मिलने लगती है।

बवासीर में लाभदायक–बवासीर के रोगियों के लिए अलसी बहुत ही लाभदायक है। जिन्हें यह बीमारी हो, वे 2-4 चम्मच अलसी का तेल आधा गिलास गर्म दूध में मिला कर सोते समय पीयें। सुबह कम से कम दो बार दस्त होगा और धीरे-धीरे बवासीर भी ठीक हो जायेगी।

दमा में फायदेमंद–दमा रोगियों के लिए अलसी बहुत ही लाभदायक है। यदि दमा के रोगी इसका नियमित सेवन करते हैं तो श्वास नालियों व फेफड़ों में जमे कफ को निकालकर यह बाहर फेंक देती है, इससे खाँसी एवं दमा दोनों में फायदा होता है। इसके लिए तीन ग्राम अलसी 120 मिली ग्राम जल में उबाल लें, फिर उसे एक घंटे ढँक कर रख दें और इसके बाद उसमें 20 ग्राम मिश्री या शहद मिलाकर उसका सेवन करें, दमा ठीक हो जायेगा।

हैजा में लाभदायक–यदि किसी व्यक्ति को हैजा हो जाये, तो अलसी के 5-6 ग्राम चूर्ण को 50 ग्राम गरम पानी में मिला कर ठंड़ा कर लें, इसके बाद दिन में 3-4 बार पिलायें। हैजा ठीक हो जायेगा।

जोड़ों एवं कमर दर्द में लाभदायक– कमर दर्द एवं जोड़ों का दर्द ये आम बीमारी है। एक उम्र के बाद इसकी पीड़ा को अधिकांश लोग भुगतते हैं, इस प्रकार के रोगियों के लिए अलसी बहुत ही लाभदायक है। ऐसे रोगियों को 250 ग्राम अलसी के तेल में 15 ग्राम पिसी सोंठ और 4 चम्मच नमक मिलाकर धुँआ उठने तक गर्म करें। उसे ठंडा करके एक शीशी में भर लें, इस तेल की मालिश से पीठ दर्द, कमर दर्द, जोड़ों का दर्द ठीक हो जायेगा।

डायबिटीज में लाभदायक–रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों के प्रयोग से होनेवाले खाद्यान्न का सेवन करने से डायबिटीज के रोगियों की संख्या में काफी इजाफा हुआ है। ऐसे रोगियों के लिए अलसी बहुत ही लाभकारी है। जिन्हें डायबिटीज है, वे 25 ग्राम अलसी पीस कर उसे आटा के साथ गूँथ लें और रोटी बना लें। इसे दिन में तीन बार खायें। डायबिटीज नियंत्रित हो जायेगी।

इसके अतिरिक्त छोटी-मोटी सीजनल बीमारियों में इसका सेवन बहुत ही फायदेमंद होता है। यदि लोग इसका किसी न किसी रूप में सेवन करें, तो वे स्वस्थ रहते हैं। ❑

शोषित और उपेक्षित जागो!

❑ लक्ष्मी निधि

शोषित और उपेक्षित जागो, देखो हुवा विहान,
नवप्रभात कर रहा तुम्हारा, बारबार आह्वान्।

सोने वाले कभी नहीं रे! मंजिल पर जा पाते,
आँसू पीकर जीने वाले, जीवन व्यर्थ गवाँते।

कायर काहिल ही डरते हैं पीछे कदम हटाते,
वीर पुत्र, हरदम मंजिल के मस्तक पर चढ़ जाते।

चुल्हे-चौके में सिमट कर, जान गवाने वाली,
माटी की बेटी जागो! तुम बनकर दुर्गा-काली।

दुनिया भर से कहो कि अब हम, हक के लिए लड़ेंगे,
लाख आँधियाँ उठे, मगर हम हर्गिज नहीं हटेंगे।

अरे शिल्पियों! नाचो-गाओ, लेकर आज मशाल,
कब तक पड़े रहोगे ऐसे, बनकर दुःखी बेहाल?

दिया विष्णु को चक्र-सुदर्शन, शंकर को त्रिशूल,
मगर, बना है आज देख लो, तू सड़कों की धूल।

तू ने ही तो दिया इन्द्र को, महा बज्र का दान,
तेरी शिल्प-कला से, दुनिया, बनती गयी महान।

लेकिन, तू रह गया उपेक्षित, विलख-विलख रोती है,
सोने वालों के जीवन में, ऐसा ही होता है।

जागो और जगाओ सबको, एक मंच पर आओ,
खड़ी करो नवशक्ति विश्व में, सब मिल जोर लगाओ।

जिसकी मुट्ठी में ताकत है, उसके सिर पर ताज,
ऐसे ही नरपुंगव पर यह, दुनिया करती नाज।

इसीलिए, तो मैं कहता हूँ आँसू बहाना छोड़ो,
जिस खूँटे से बँधे हुए हो, उस खूँटे को तोड़ो।

निर्बल जन को सबल बनाओ, यही लगाओ नारा,
तभी हिमालय से उतरेगी, जब गंगा की धारा।

ताकत वालों के चरणों में, सब कोई शीश नवाते,
शक्तिहीन हो शेर तो वह भी, बिल्ली से बन जाते।

इसीलिए तो मैं कहता हूँ जागो! भाई जागो!
कुरुक्षेत्र में लड़ो-मरो, मत युद्धक्षेत्र से भागो।

हम अतीत को नहीं, विवेक से, वर्तमान को आँके,
जो है, उसको समझें-परखें, निज भविष्य में झाँकें।

हम अतीत की कथा-कहानी, कब तक सुने-सुनायें?
वर्तमान को छोड़ भविष्य पर, कब तक आँख गड़ायें?

जीर्णशीर्ण हो गया समाज यह, उसको नया बनाओ,
अंधकार हो जहाँ, वहाँ क्रान्ति की आग जलाओ।

❑

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए महामंत्री, शेख हुसैन द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा प्रिण्टेक, इंडियन प्रेस कॉलोनी, मलदहिया, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार। छपी प्रतियाँ : 1450